وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -18

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

12 जुल् क़ादा 1447 हिज्री क़मरी, 30 -शहादत 1405 हिज्री शम्सी, 30 अप्रैल 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡا قَوّٰمِیۡنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالۡقِسۡطِ ۫ وَلَا یَجۡرِمَنَّکُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعۡدِلُوۡا ؕ اِعۡدِلُوۡا ۟ هُوَ اَقۡرَبُ لِلتَّقۡوٰی ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۔ ﴿سُوۡرَۃُ الۡمَآئِدَۃِ: 9﴾

अनुवाद: ऐ ईमान लाने वालों! ख़ुदा तआला के लिए दृढ़ता के साथ निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में गवाह बन जाओ, और किसी समुदाय की शत्रुता तुम्हें हरगिज़ इस बात पर तैयार न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो—यह तक़वा के सबसे अधिक निकट है, और ख़ुदा तआला से डरते रहो। निस्संदेह ख़ुदा तआला उस हर बात से सदा भली-भांति अवगत रहता है जो तुम करते हो।

समझौतों की पाबंदी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बेजोड़ उदाहरण

عَنِ الۡحَسَنِ بۡنِ عَلِیِّ بۡنِ اَبِیۡ رَافِعٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ اَنَّ اَبَا رَافِعٍ اَخۡبَرَہٗ قَالَ: بَعَثَنِیۡ قُرَیۡشٌ اِلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَاَیۡتُ رَسُوۡلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ اُلۡقِیَ فِیۡ قَلۡبِیَ الۡاِسۡلَامُ فَقُلۡتُ: یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ! اِنِّیۡ وَاللّٰہِ! لَا اَرۡجِعُ اِلَیۡہِمۡ اَبَدًا ۔ فَقَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ اِنِّیۡ لَا اَخِیۡسُ بِالۡعَہۡدِ وَلَا اَحۡبِسُ الۡبُرُدَ وَلٰکِنِ ارۡجِعۡ ۔ فَاِنۡ کَانَ فِیۡ نَفۡسِکَ الَّذِیۡ فِیۡ نَفۡسِکَ الۡاٰنَ فَارۡجِعۡ قَالَ: فَذَہَبۡتُ ثُمَّ اَتَیۡتُ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ فَاَسۡلَمۡتُ ۔

(ابوداؤد کتاب الجهاد باب فی الامام یستجن به فی العهود)

हज़रत हसन बिन अली बिन अबी राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि उन्हें अबू राफ़े ने बताया कि क़ुरैश ने मुझे दूत और संदेशवाहक बनाकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजा। जब मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा तो इस्लाम की सत्यता मेरे दिल में बस गई। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया, "ऐ रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ख़ुदा की कसम, अब मैं उनकी ओर कभी वापस नहीं जाऊँगा।"

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मैं समझौतों का उल्लंघन नहीं कर सकता और न ही किसी दूत को रोकना उचित समझता हूँ। बेहतर है कि तुम वापस चले जाओ, और जो भावना इस समय तुम्हारे दिल में है, यदि वही वहाँ जाकर भी बनी रहे, तो फिर वापस आ जाना।"

अबू राफ़े कहते हैं, अतः मैं क़ुरैश के पास गया और उन्हें पूरी बातचीत से अवगत किया। इसके बाद मैं मदीना वापस आया और इस्लाम स्वीकार कर लिया। (संदर्भ: हदीक़तुस्सालिहीन, पृष्ठ संख्या 606)

दुश्मन क़ौमों की दुश्मनी तुम्हें न्याय से न रोके

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

खुदा तआला ने न्याय के बारे में, जो बिना सत्य पर दृढ़ता से कायम हुए प्राप्त नहीं हो सकता, यह फ़रमाया है:

لَا یَجۡرِمَنَّکُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعۡدِلُوۡا ؕ اِعۡدِلُوۡا ۟ هُوَ اَقۡرَبُ لِلتَّقۡوٰی

अर्थात दुश्मन क़ौमों की दुश्मनी तुम्हें न्याय से न रोके। न्याय पर दृढ़ रहो, क्योंकि तक़वा इसी में है।

अब आप जानते हैं कि जो क़ौमें नाहक सताएँ, कष्ट दें, रक्तपात करें, पीछा करें और बच्चों व स्त्रियों तक की हत्या करें, जैसा कि मक्का के काफ़िरों ने किया था, और फिर भी लड़ाइयों से बाज न आएँ—ऐसे लोगों के साथ व्यवहार में न्याय करना कितना कठिन होता है। लेकिन क़ुरआनी शिक्षा ने ऐसे जानी दुश्मनों के अधिकारों को भी नष्ट नहीं किया और न्याय व सत्य पर चलने की ताकीद की।

मैं सच्चाई के साथ कहता हूँ कि दुश्मन के साथ नरमी से पेश आना आसान है, लेकिन उसके अधिकारों की रक्षा करना और मुकदमों में न्याय व निष्पक्षता को हाथ से न जाने देना बहुत कठिन है, और यह केवल बहादुर लोगों का काम है। अक्सर लोग अपने साझे दुश्मनों से तो प्रेम करते हैं और मीठी-मीठी बातें करते हैं, लेकिन उनके अधिकार दबा लेते हैं। एक भाई दूसरे भाई से प्रेम करता है, पर उसी प्रेम की आड़ में धोखा देकर उसके अधिकार छीन लेता है। उदाहरण के तौर पर, यदि वह ज़मींदार है, तो चालाकी से उसका नाम बंदोबस्त के कागज़ों में दर्ज नहीं होने देता, और इस तरह अत्यधिक प्रेम दिखाता है कि मानो उस पर कुर्बान हो रहा हो।

अतः खुदा तआला ने इस आयत में केवल प्रेम का उल्लेख नहीं किया, बल्कि

शेष 8 पर

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

तुम दुश्मन की बुराई का जवाब अत्यंत अच्छे व्यवहार से दो

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत क़ुरआनी

اِدۡفَعۡ بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ السَّیِّئَۃَ ؕ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا یَصِفُوۡنَ (सूरह अल-मोमिनून: 97)

की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

इस स्थान पर यह सिखाया गया है कि दुश्मन चाहे अत्याचारी ही क्यों न हो, फिर भी तुम उसके मुकाबले में उपकार और क्षमा से काम लो। क्योंकि बुराई के बदले भलाई करना दृढ़ निश्चयी नबियों का कार्य है। और तुम्हारे दिल में यह विचार न आए कि दुश्मन ने तो अत्याचार भी कर लिया और फिर मेरी क्षमा से सज़ा से भी बच गया—कहीं ऐसा न हो कि वह फिर कोई शरारत करे। क्योंकि मैं उसकी हर चाल को जानता हूँ और कोई भी चीज़ मेरी सज़ा और इनाम से बाहर नहीं रह सकती।

दूसरी जगह खुदा तआला इसकी बुद्धिमत्ता बताते हुए फ़रमाता है:

اِدۡفَعۡ بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ فَاِذَا الَّذِیۡ بَیۡنَکَ وَبَیۡنَہٗ عَدَاوَۃٌ کَاَنَّہٗ وَلِیٌّ حَمِیۡمٌ (सूरह हामिम अस-सज्दा: 35)

शेष 8 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अमन के लिए तरसती दुनिया !

अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच चल रही जंग को एक महीने से अधिक समय हो चुका है। इस युद्ध के शुरू होने से पहले यह समझा जा रहा था कि कुछ ही दिनों में इसका फैसला हो जाएगा, लेकिन राजनीतिक विशेषज्ञों और विश्लेषकों के अनुमानों के विपरीत यह युद्ध न केवल लंबा खिंच गया है, बल्कि जान-माल का नुकसान इज़राइल और ईरान की सीमाओं से निकलकर क्षेत्र के अन्य खाड़ी देशों तक भी फैल गया है। अरब देशों के साथ-साथ इज़राइल और ईरान हर पल जान के खतरे का सामना कर रहे हैं। अब तक ईरान, इज़राइल और खाड़ी देशों के हजारों सैन्य और औद्योगिक ठिकानों पर हमले हो चुके हैं, और अब अन्य एशियाई और यूरोपीय देश, जिनमें हमारा देश भारत भी शामिल है, तेल, गैस और बढ़ती महंगाई से प्रभावित हो रहे हैं।

हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य और अब लाल सागर के समुद्री मार्गों के प्रभावित होने से भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है, जिसकी आंच एशिया के साथ-साथ यूरोप के कुछ देशों तक भी पहुँच रही है। यदि यह युद्ध लंबे समय तक चलता रहा तो इसके विश्व युद्ध में बदलने की प्रबल संभावना है। विशेषज्ञों के अनुसार इस युद्ध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I.) का उपयोग इसे और भी खतरनाक बना सकता है, जहाँ न नैतिक मूल्य होंगे और न मानवीय सहानुभूति।

अमेरिकी राष्ट्रपति के हालिया बयानों से यह संकेत मिलता है कि वे दो से तीन सप्ताह के भीतर इस युद्ध को समाप्त करने की बात कर रहे हैं, लेकिन उनके पूर्व बयानों को देखते हुए वैश्विक स्तर पर इस पर कोई अंतिम राय देने से बचा जा रहा है। यह शुक्र की बात है कि ईरान और अमेरिका फिलहाल अस्थायी रूप से युद्धविराम (ceasefire) पर सहमत हुए हैं, लेकिन इसके बने रहने के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि शुरुआत से ही इस पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं।

इमाम जमाअत अहमदिया, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कई वर्ष पहले इस संदर्भ में ब्रिटिश संसद, जर्मनी के कोब्लेंज़ स्थित सैन्य मुख्यालय, वाशिंगटन डी.सी. के कैपिटल हिल में कांग्रेस और सीनेट के सदस्यों, राजदूतों, व्हाइट हाउस और स्टेट डिपार्टमेंट के अधिकारियों तथा अन्य बुद्धिजीवियों के सामने विश्व युद्ध के खतरों को भांपते हुए दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए भाषण दिए थे। इसी प्रकार उन्होंने इज़राइल, ईरान, अमेरिका और अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को चिंतनशील पत्र लिखकर इस ओर ध्यान आकर्षित किया था। ये भाषण और पत्र आज भी दुनिया के लोगों को कार्य करने का संदेश दे रहे हैं।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आज से चौदह वर्ष पहले, 26 फरवरी 2012 को इज़राइल के प्रधानमंत्री श्री बिन्यामिन नेतन्याहू को एक सहानुभूतिपूर्ण पत्र लिखा था।

आप फ़रमाते हैं:

"आजकल हम यह समाचार सुन रहे हैं कि आप ईरान पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। इसके बावजूद कि विश्व युद्ध के भयंकर परिणाम आपके सामने हैं—पिछले विश्व युद्ध में जहाँ करोड़ों लोग मारे गए, वहीं लाखों यहूदी भी मारे गए थे। अपने देश के प्रधानमंत्री होने के नाते आपकी जिम्मेदारी बनती है कि आप अपनी जनता की जानों की रक्षा करें। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियाँ साफ बता रही हैं कि अगला विश्व युद्ध केवल दो देशों के बीच नहीं होगा, बल्कि देशों के समूह बनकर सामने आएँगे।

विश्व युद्ध का खतरा अत्यंत गंभीर रूप से सामने आ रहा है, जिससे मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों—सभी की जानों को खतरा है। यदि खुदा न करे ऐसा युद्ध भड़क उठा तो यह मानवता की लगातार तबाही का कारण बनेगा, जिसका असर आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा, जो अपाहिज या विकलांग पैदा होंगी। इसका कारण यह है कि अगली जंग में परमाणु हथियारों का उपयोग होगा।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि दुनिया को युद्ध के कगार पर ले जाने के बजाय पूरी कोशिश करें कि मानवता वैश्विक तबाही से सुरक्षित रहे। आपसी विवादों को शक्ति के प्रयोग से हल करने के बजाय बातचीत और वार्ता का मार्ग अपनाएँ, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को उज्ज्वल भविष्य दे सकें, न कि उन्हें विकलांगता का उपहार दें।"

(हज़ूर के अंग्रेज़ी पत्र का उर्दू अनुवाद, संदर्भ: "वैश्विक संकट और शांति का मार्ग", पृष्ठ 160)

इसी प्रकार हज़ूर अनवर ने उन्हीं दिनों इस्लामी गणराज्य ईरान के राष्ट्रपति को भी पत्र लिखा, जिसके कुछ अंश प्रस्तुत हैं:

"विश्व शांति को वर्तमान खतरों ने मुझे मजबूर किया कि मैं आपको यह पत्र लिखूँ। आप ईरान के प्रमुख के रूप में ऐसे निर्णय लेने की शक्ति रखते हैं, जो न केवल आपकी जनता के भविष्य को प्रभावित करेंगे बल्कि पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण हैं। आज हर ओर बेचैनी और अस्थिरता फैली हुई है। दुनिया के कुछ हिस्सों में छोटे स्तर पर युद्ध शुरू हो चुके हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में वैश्विक शक्तियाँ शांति के नाम पर हस्तक्षेप कर रही हैं।

आज दुनिया का हर देश या तो किसी दूसरे देश का विरोधी बना हुआ है या किसी का समर्थक, लेकिन न्याय के मूल सिद्धांतों को पूरा करने की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह कहना पड़ता है कि एक और विश्व युद्ध की नींव रखी जा चुकी है।

दुनिया के कई देश परमाणु हथियारों से लैस हैं और उनके भीतर परस्पर घृणा और दुश्मनी भी चरम पर है। इस स्थिति में तीसरे विश्व युद्ध के बादल साफ दिखाई दे रहे हैं, जो परमाणु युद्ध होगा। इससे व्यापक तबाही होगी और आने वाली पीढ़ियाँ विकलांग पैदा होंगी।

मेरा विश्वास है कि शांति के दूत और रहमतुल्लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उम्मती होने के नाते हम कभी भी ऐसी तबाही को सहन नहीं कर सकते। इसलिए मेरी ईरान से अपील है कि वह अपनी वैश्विक जिम्मेदारी को समझते हुए तीसरे विश्व युद्ध की संभावनाओं को कम करने में सकारात्मक भूमिका निभाए।

मैं मानता हूँ कि इज़राइल अपनी सीमाओं से आगे बढ़ता है और उसकी नज़र ईरान पर है। यदि कोई देश आप पर हमला करे तो आपको रक्षा का पूरा अधिकार है, लेकिन जहाँ तक संभव हो, विवादों को बातचीत और समझौते से हल करना ही बेहतर है। मेरी विनम्र प्रार्थना है कि शक्ति के प्रयोग के बजाय संवाद का रास्ता अपनाएँ।

मैं खुदा तआला के उस चुने हुए व्यक्ति का अनुयायी होने के नाते आपसे निवेदन करता हूँ, जो इस युग में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायी के रूप में भेजा गया—जिसने मसीह मौऊद और इमाम महदी होने का दावा किया—उनका उद्देश्य मानवता को उसके सृजनकर्ता से जोड़ना और लोगों में न्याय स्थापित करना है।

खुदा तआला मुस्लिम उम्मत को इस सुंदर शिक्षा को समझने की तौफीक दे।"

(वैश्विक संकट और शांति का मार्ग, पृष्ठ 167-169)

हज़ूर अनवर ने 8 मार्च 2012 को संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति को भी एक पत्र लिखा, जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:

"दुनिया में बढ़ती हुई चिंताजनक परिस्थितियों को देखते हुए मैंने आवश्यक समझा कि आपको यह पत्र लिखूँ, क्योंकि आप संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति हैं—एक ऐसी शक्ति जो विश्व में सबसे बड़ी है। इस कारण आपके निर्णय न केवल आपके देश बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित करते हैं।

मेरी आपसे और सभी विश्व नेताओं से अपील है कि अन्य देशों का मार्गदर्शन करने के लिए शक्ति के प्रयोग के बजाय कूटनीति, राजनीतिक समझदारी और बुद्धिमत्ता का उपयोग करें। बड़ी शक्तियों, विशेष रूप से अमेरिका को विश्व शांति के लिए सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए और छोटे देशों की गलतियों को बहाना बनाकर विश्व व्यवस्था को नष्ट नहीं करना चाहिए।

मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करें ताकि दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की आग में झोंके जाने से रोका जा सके। यदि हम शांति स्थापित करने में असफल रहे, तो यह युद्ध केवल एशिया और यूरोप के गरीब देशों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ इसका खामियाजा भुगतेंगी। जब परमाणु युद्ध के कारण विकलांग बच्चे जन्म लेंगे, तो वे अपनी पिछली पीढ़ियों को कभी माफ नहीं करेंगे।

खुदा तआला आपको और सभी विश्व नेताओं को इस संदेश को समझने की तौफीक दे।"

(वैश्विक संकट और शांति का मार्ग, पृष्ठ 175-177)

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मध्य पूर्व में वर्तमान युद्ध स्थिति के संदर्भ में मुस्लिम उम्मत के लिए सुनहरी नसीहतें तथा दुआओं की प्रेरणा
श्रीमती साहिबज़ादी अमतुल जमील साहिबा, पुत्री हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु; श्रीमान डॉक्टर रशीद अहमद खान साहिब (हॉलैंड) और श्रीमाना ज़ैनब बीबी साहिबा, पत्नी श्रीमान बशीर अहमद साहिब (पूर्व सदर जमाअत और इमाम मस्जिद चक 275 करतारपुर) के देहांत पर मरहूमीन का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 मार्च 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो संदेश लेकर आए, उसका उद्देश्य एकमात्र ख़ुदा तआला पर ईमान लाना, उसकी इबादत करना, उसकी एकता को स्थापित करना और उसके लिए प्रयास करना, तथा उसके बंदों के अधिकार अदा करना है। फिर एक उम्मत बनकर आपस में भाईचारे के साथ रहना है। लेकिन आज इस दावे के बावजूद कि हम कलिमा पढ़ने वाले हैं और "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" पर विश्वास रखते हैं, हमारे अंदर फूट है और एकता नहीं है। हमारे कर्म उस शिक्षा के अनुरूप नहीं हैं जिसका हम दावा करते हैं। परिणामस्वरूप यदि हम मुस्लिम दुनिया की वर्तमान स्थिति पर विचार करें तो वह अत्यंत चिंताजनक है।

यद्यपि कुछ इस्लामी देशों के पास प्राकृतिक संसाधन और धन भी है, लेकिन इसके बावजूद दुनिया की शक्तियों के सामने उनका कोई विशेष स्थान नहीं है, न ही धर्म की उन्नति के लिए उनका कोई विशेष योगदान दिखाई देता है और न ही इस्लामी शिक्षाओं पर अमल करने की वह कोशिश नज़र आती है जो होनी चाहिए। इसका परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है, जैसा कि मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि गैर लोग इस स्थिति का लाभ उठाते हैं।

अतः मुस्लिम सरकारों, राजनेताओं और शासकों को चाहिए कि वे केवल अपने व्यक्तिगत हितों की प्राप्ति के बजाय यह प्रयास करें कि हम एक मुस्लिम उम्मत के रूप में एकजुट हों और इसके लिए पूरी कोशिश करें। जब ऐसा होगा तभी हम दुनिया के आक्रमणों से बच सकेंगे, अपना सम्मान कायम रख सकेंगे और इस्लाम विरोधी शक्तियों को हमारे अंदर फूट डालने से रोक सकेंगे। इसके लिए हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने इस युग में क्या व्यवस्था की है। वह कौन-सी दिव्य व्यवस्था है जिस पर अमल करने से हम इन समस्याओं से बच सकते हैं और एक उम्मत बन सकते हैं। ख़ुदा तआला की वह व्यवस्था यह है कि उसने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा, ताकि वे एक उम्मत तैयार करें।

अतः हमें इस बात पर भी गंभीरता से विचार करना चाहिए। जब हम इस पर सोचेंगे और इस्लामी देशों के लोग इस पर ध्यान देंगे, तभी वे अपने खिलाफ उठने वाले फसादों और उपद्रवों से बच सकेंगे।

बहरहाल अहमदी होने के नाते हमारी यही कोशिश और दुआ है कि ख़ुदा तआला मुस्लिम उम्मत को एक करे और उन्हें उन फसादों और अत्याचारों से बचाए जिनमें वे आजकल पीड़ित हैं।

दुनिया के हालात के बारे में मैं लंबे समय से कह रहा हूँ। पहले यह विचार था कि शायद केवल यूरोप और अन्य पश्चिमी देश ही इन परिस्थितियों के कारण बनेंगे, लेकिन वे तो कारण बन ही रहे हैं, साथ ही स्वयं इस्लामी देश भी इसका कारण बन रहे हैं। इन पश्चिमी शक्तियों ने पहले इस्लामी देशों में अशांति पैदा की और फिर धीरे-धीरे उसे एक देश से दूसरे देश तक फैलाते गए। इसके पीछे उनके उद्देश्य स्पष्ट हैं—वे अपनी शक्ति के बल पर इन देशों के संसाधनों पर नियंत्रण करना चाहते हैं और उन्हें अपने प्रभाव में लाना चाहते हैं।

यद्यपि कुछ अरब देशों के पास धन-संपत्ति है, लेकिन इसके बावजूद ये पश्चिमी शक्तियाँ उन्हें अपने अधीन बनाए हुए हैं। जो बातें मैं लंबे समय से कहता आ रहा हूँ, आज उनके परिणाम स्पष्ट रूप से सामने आ रहे हैं।

हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि दज्जाली शक्तियाँ कभी भी मुसलमानों को शांति और सुकून से रहते हुए नहीं देखना चाहतीं। उनका मुख्य उद्देश्य ही यह है कि मुस्लिम दुनिया में हमेशा अशांति बनी रहे। वे यह धोखा देती रही हैं कि जहाँ तेल या अन्य संसाधन हैं, वहाँ शांति के लिए समझौते किए जाते हैं, जबकि उनके अंदरूनी इरादे कुछ और ही थे, जो आज सामने आ चुके हैं।

अतः

हमारा कर्तव्य है कि आज विशेष रूप से दुआओं के माध्यम से ख़ुदा तआला के सामने झुकें और मुस्लिम दुनिया के लिए प्रार्थना करें। इसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।

आजकल मध्य पूर्व में जो युद्ध चल रहा है, उसका विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि अमेरिका ने अनेक मुस्लिम देशों में अपने सैन्य ठिकाने स्थापित किए हुए हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि किस उद्देश्य से? क्या वास्तव में इन देशों की सुरक्षा के लिए? आखिर इन देशों को खतरा किससे था? इन शक्तियों ने स्वयं ही खतरे उत्पन्न किए और फिर यह धारणा बनाई कि सुरक्षा के लिए इन ठिकानों की आवश्यकता है।

संभव है कि जिनसे मुसलमानों को खतरा बताया गया, उनके विरुद्ध ये शक्तियाँ कभी अपनी शक्ति का उपयोग भी न करें। या फिर मुसलमान देशों को यह विश्वास दिलाया गया कि हमें ठिकाने दो, हम तुम्हारे हितों और व्यापार को लाभ पहुँचाएँगे। जबकि उनका वास्तविक उद्देश्य इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत बनाए रखना था, ताकि अपनी विरोधी शक्तियों का सामना कर सकें।

यदि अरब देशों को कोई खतरा था भी, तो वह इन शक्तियों का स्वयं उत्पन्न किया हुआ था। इन ठिकानों का उद्देश्य केवल क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता बनाए रखना था—चाहे वह गैर-इस्लामी दुनिया पर हो या इस्लामी दुनिया पर। ईरान तो हमेशा से उनके लिए समस्या रहा है, और कुछ मुस्लिम देशों के साथ उसके मतभेदों का भी इन शक्तियों ने लाभ उठाया।

क्योंकि इज़राइल के प्रति ईरान की नीति कठोर थी, इसलिए उन्होंने यह उचित समझा कि अरब देशों को अपने प्रभाव में लाकर वहाँ ठिकाने बनाए जाएँ, ताकि इज़राइल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और ईरान को दबाव में रखा जा सके। इसका परिणाम अब स्पष्ट है—इन ठिकानों के कारण अरब देशों पर हमले हुए और उनकी अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।

जहाँ तेल और पर्यटन से आय होती है, वहाँ भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस स्थिति का लाभ भी उन्हीं शक्तियों को हुआ है और आगे भी होगा। क्योंकि जब युद्ध होता है, तो अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है और विरोधी पक्ष भी प्रतिक्रिया देता है। चूँकि ईरान के साथ संघर्ष था, इसलिए उसने भी अरब देशों में मौजूद अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया।

एक अरब पत्रकार ने हाल ही में लिखा है कि अरब देशों को सावधान रहना चाहिए, क्योंकि जो हमले ईरान के नाम पर बताए जा रहे हैं, वे संभव है कि स्वयं अमेरिका या इज़राइल द्वारा भी किए जा रहे हों। यदि पहले ईरान ने कुछ हमले किए भी हों, तो अब उनका लाभ उठाकर अन्य शक्तियाँ भी ऐसा कर सकती हैं। कुछ हमलों की ईरान ने स्वयं भी खंडन किया है। यहाँ तक कहा गया है कि संभव है कि एक समय ऐसा आए जब अमेरिका और इज़राइल इस युद्ध से बाहर हो

जाएँ और मुस्लिम दुनिया आपस में लड़ती रहे—जो कि उनका उद्देश्य है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह ने इराक युद्ध के दौरान भी यह चेतावनी दी थी कि यह अशांति पूरी दुनिया में फैलती चली जाएगी।

(संदर्भ: "खाड़ी का संकट", पृष्ठ 29, 76)

काश कि मुस्लिम दुनिया इस बात को समझे।

अब यदि हम समीक्षा करें तो देखते हैं कि इराक की जंग के साथ ही अन्य मुस्लिम देशों में भी अशांति फैलाने की कोशिश की गई। उनमें फसाद पैदा किया गया और उसके बाद से अन्य मुस्लिम देशों में लगातार अशांति बढ़ती चली गई, जिसे कोई भी नकार नहीं सकता। हम देखते हैं कि मुस्लिम दुनिया में कुछ मुस्लिम देश ही आपस में एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा, यह अशांति उन्हीं पश्चिमी शक्तियों द्वारा फैलायी गई है और देखने में इसका रुकना संभव नहीं लगता, सिवाय इसके कि ख़ुदा तआला की कोई विशेष योजना हो—और उसके लिए भी प्रयास करना होगा।

इसलिए हमें दुआ भी करनी चाहिए कि खुदा तआला मुस्लिम दुनिया को इस अशांति और फसाद से बचाए और सुरक्षित रखे, और मुसलमानों को चाहिए कि वे शांतिपूर्ण बनें और आपस में भाईचारे के साथ रहें। यही उनकी इस्लामी शिक्षा है, न कि वे एक-दूसरे की जान लेने लगें।

अतः

हमारा यही कार्य है और हम लंबे समय से यह कोशिश कर रहे हैं कि अपने और पराए—दोनों को अत्याचार से रोकने के लिए जागरूक किया जाए, उन्हें सावधान किया जाए। क्योंकि यह अत्याचार जिस तरह दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है, उससे प्रतीत होता है कि एक बड़े स्तर पर विश्व युद्ध होने वाला है। बल्कि कुछ पश्चिमी विश्लेषकों के अनुसार तो विश्व युद्ध शुरू भी हो चुका है। मैं भी यही कहता हूँ कि यह शुरू हो चुका है। लेकिन यदि अब भी मुस्लिम दुनिया समझदारी से काम ले, होश में आए, एक हो जाए और आपस में मिलकर विचार करे, तो वह अब भी दज्जाल के फितनों से बच सकती है।

यदि हम दुनिया की स्थिति देखें तो खतरा बहुत बड़ा है। जैसा कि पहले भी कहा, हर कोई अपने हितों में लगा हुआ है, और जब अत्यधिक स्वार्थ पैदा हो जाता है, तो मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता है।

अतः हमें यह समझना होगा कि यदि दुनिया में अशांति को कम करना है, तो केवल अपने अधिकार लेने से काम नहीं चलेगा, बल्कि दूसरों को उनके अधिकार देना भी आवश्यक होगा। यदि मुस्लिम दुनिया इस बात को समझे और पश्चिमी तथा बड़ी शक्तियों में अपने शुभचिंतकों से कहे कि शांति के लिए तुम्हें भी कुछ अधिकार छोड़ने होंगे—बल्कि वे तो पहले ही दूसरों के अधिकार छीन रहे हैं—तो उन्हें यह समझाना होगा कि न्याय के बिना शांति संभव नहीं।

जैसा कि मैंने कहा, मैं लंबे समय से लोगों को इस ओर ध्यान दिलाता रहा हूँ। वही लोग, जो पहले कहते थे कि तुम बहुत निराशाजनक बातें करते हो और दुनिया के बारे में नकारात्मक सोच रखते हो, आज स्वयं कह रहे हैं कि जो बातें पहले असंभव लगती थीं, वे अब संभव हो गई हैं और युद्ध शुरू हो चुके हैं।

उनके अपने विश्लेषक, जो अमेरिका और यूरोप में बैठे हैं, अब लिख रहे हैं कि विश्व युद्ध की शुरुआत हो चुकी है और यह बढ़ती जाएगी। जब तक ये शक्तियाँ अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए प्रयास करती रहेंगी, तब तक इस खतरे में कमी की कोई संभावना नहीं है। जब युद्ध होता है तो नुकसान दोनों पक्षों को होता है।

अब मध्य पूर्व में जो युद्ध हो रहा है—कहा जाता है कि यह अमेरिका द्वारा ईरान पर हमले से शुरू हुआ—लेकिन ईरान ने पहले ही चेतावनी दी थी कि यदि उस पर हमला हुआ, तो वह अरब देशों में स्थित अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाएगा। फिर जब युद्ध शुरू हुआ तो ईरान पर बमबारी हुई, उसके शहर तबाह किए गए, निर्दोष लोगों और बच्चों को मारा गया, उनके आध्यात्मिक नेता के निवास पर हमला किया गया और उनके परिवार के कई सदस्यों को मार दिया गया।

इन शक्तियों का यह विचार था कि यदि हम इस शासन को समाप्त कर देंगे तो लोगों को स्वतंत्रता मिल जाएगी। लेकिन इसका उल्टा प्रभाव हुआ—जो थोड़े बहुत विरोधी थे, वे भी उनके समर्थन में आ गए।

और उस नेता, जिनका नाम खामनेई साहिब है, उन्हें तो शहादत का दर्जा मिल गया, और इस कारण उनकी इज़्ज़त और भी बढ़ गई। उनके बच्चों और परिवार के लोगों को भी मार दिया गया। इस अत्याचार का परिणाम यह हुआ कि शासन परिवर्तन तो नहीं हुआ, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ गई।

बहरहाल, ईरान ने प्रतिक्रिया के रूप में अरब देशों में स्थित अमेरिकी ठिकानों पर हमले किए। इसके अलावा कुछ तेल क्षेत्रों आदि के बारे में यह प्रचार किया गया कि ईरान ने हमला किया है, जबकि ईरान ने स्पष्ट किया कि उसने ऐसे स्थानों पर हमला नहीं किया और न ही उसका ऐसा कोई इरादा है। यह मुसलमानों के दिलों में एक-दूसरे के खिलाफ नफरत पैदा करने की एक और चाल है।

जैसा कि पहले एक पत्रकार का बयान बताया गया, यह भी संभव है कि कुछ हमले स्वयं ये शक्तियाँ करें और उसका दोष ईरान पर डाल दें।

ऐसी स्थिति में मुस्लिम दुनिया को बहुत सोच-समझकर कदम उठाना चाहिए। लेकिन हम अहमदी, दर्द रखने के बावजूद, मजबूर हैं—हम केवल चेतावनी दे सकते हैं, दुआ कर सकते हैं और समझाने की कोशिश कर सकते हैं कि जो हो रहा है, वह गलत है। मुस्लिम सरकारों को अब भी समझना चाहिए और केवल अपने राष्ट्रीय हितों के बजाय मुस्लिम उम्मत के हितों को सामने रखना चाहिए, तथा किसी भी प्रकार की गद्दारी से बचना चाहिए। तब भी कुछ हद तक नुकसान से बचा जा सकता है।

मध्य पूर्व के अरब देशों के पास भले ही तेल की संपत्ति है, लेकिन न तो उनके पास पर्याप्त रक्षा क्षमता है और न ही उनका उद्योग विकसित हो रहा है। केवल तेल या पर्यटन से विकास संभव नहीं है। उनका पूरा निर्भरता पश्चिमी दुनिया पर है, और इसी कमजोरी का लाभ उठाकर पश्चिमी शक्तियों ने वहाँ अपने सैन्य ठिकाने बनाए हैं।

जब ईरान के खिलाफ युद्ध शुरू हुआ, तो उसने उन ठिकानों को निशाना बनाया—हालाँकि अब यह प्रचार किया जा रहा है कि हमले अरब देशों पर हुए हैं। इससे यह युद्ध और अधिक भयावह रूप ले चुका है।

ईरान द्वारा छोड़े गए मिसाइलों को रोकने के लिए अमेरिका ने रक्षा प्रणाली बनाई है, लेकिन विश्लेषकों का कहना है कि एक सस्ते मिसाइल को नष्ट करने में बहुत महंगा खर्च आता है। कुछ लोग कहते हैं कि इससे आर्थिक नुकसान अमेरिका को हो रहा है, लेकिन यह केवल एक अनुमान है। ये शक्तियाँ पहले से सब योजनाएँ बनाकर चलती हैं और संभव है कि यह खर्च भी वे अरब देशों से ही वसूल कर रही हों।

एक ओर तेल उत्पादन घट रहा है, महंगाई बढ़ रही है, और दूसरी ओर रक्षा खर्च का बोझ भी उन्हीं पर पड़ रहा है, जिससे उनके भंडार कम होते जा रहे हैं। अंततः सबसे अधिक नुकसान अरब देशों को ही होगा, और उन्हें यह बात समझनी चाहिए।

अब हम देखते हैं कि अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति भी अपनी पूर्व नीतियों को ही आगे बढ़ा रहे हैं। यह कोई नई नीति नहीं है—बल्कि लंबे समय से यही नीति रही है कि जहाँ अवसर मिले, वहाँ के संसाधनों पर कब्जा कर लिया जाए और फिर किसी बहाने से उसे सही ठहराया जाए।

यहाँ तक कि अमेरिका के वर्तमान उपराष्ट्रपति ने भी कहा है कि यदि कोई देश उनके साथ नहीं आता, तो वे बलपूर्वक उसके संसाधनों पर कब्जा कर सकते हैं। जो देश युद्ध में शामिल नहीं होते, उन पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं।

हाल ही में स्पेन के प्रधानमंत्री ने यह साहस दिखाया कि वे इस युद्ध में शामिल नहीं होंगे और अपने ठिकाने भी नहीं देंगे।

तो उन्हें धमकी दी गई कि अमेरिका उनके साथ व्यापारिक संबंध समाप्त कर देगा। इस प्रकार दबाव डालकर देशों को अपने साथ शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है।

ऐसी स्थिति में न्याय कहीं भी दिखाई नहीं देता, और जब न्याय समाप्त हो जाता है, तो विनाश आता है—और ऐसे भयानक परिणाम सामने आते हैं, जो आज दिखाई दे रहे हैं, बल्कि इससे भी अधिक गंभीर परिणाम भविष्य में सामने आ सकते हैं।

पिछले दिनों यूरोपीय संसद में उनकी एक सदस्य, जो स्पेन से हैं और एक महिला हैं, उन्होंने खुले तौर पर कहा कि अमेरिका की किसी भी जंग से महिलाओं को स्वतंत्रता नहीं मिली। क्योंकि वह स्वयं महिला थीं, इसलिए उन्होंने महिलाओं के दृष्टिकोण को सामने रखा। उन्होंने कहा कि अमेरिकियों का यह दावा कि हम ईरानी महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं—यह सब झूठ है, और इससे कभी भी ईरानी महिलाओं को स्वतंत्रता नहीं मिलेगी। न तो अमेरिका ने कभी किसी महिला की स्वतंत्रता के लिए युद्ध लड़ा है और न ही इस माध्यम से उन्हें स्वतंत्रता दिलाने में सफल हुआ है।

संक्षेप में बात यह है कि इन देशों में पहले से ही अमेरिका का एक प्रकार का प्रभुत्व था, लेकिन अब उसमें इज़राइल को खुले रूप से शामिल करके उस प्रभुत्व को और मजबूत किया जा रहा है।

अरब और इस्लामी देश यह बात नहीं समझते कि उन्हें ज़बरदस्ती, दबाव,

गलत तरीकों और दज्जाली चालों से ऐसी स्थिति में फँसाया जा रहा है, जहाँ वे अपने ही एक मुस्लिम देश के साथ युद्ध करें। मुसलमानों को मुसलमानों के खिलाफ ही लड़ाया जा रहा है।

बहरहाल, अब रूस और चीन भी अपना अलग समूह बना रहे हैं, और यह स्पष्ट है कि आगे भी ऐसे समूह बनेंगे या और मजबूत होंगे। इस्लामी दुनिया युद्ध का मैदान बनी रहेगी, क्योंकि उनके पास ऐसे संसाधन हैं जिन पर ये शक्तियाँ कब्जा करना चाहती हैं। काश! मुसलमान इस बात को समझें और समझदारी से काम लें।

अब यह कहा जा रहा है कि अमेरिका और उसके सहयोगियों ने ईरान पर इसलिए हमला किया क्योंकि उसका ऐसा-वैसा इरादा था—यदि वह ऐसा करता तो परमाणु बम बना लेता या अन्य खतरे पैदा हो जाते। यानी केवल एक कल्पना के आधार पर युद्ध शुरू कर दिया गया। यह पूरी तरह ज़बरदस्ती की बात है।

अब उनके अपने पश्चिमी विश्लेषक भी यह कहने लगे हैं कि ईरान को हराना या उससे युद्ध करना इतना आसान नहीं है जितना समझा गया था। ईरान एक बड़ा और विस्तृत देश है और उसके पास अपनी शक्ति भी है। यह युद्ध लंबा चल सकता है। इसका नुकसान पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर होगा, लेकिन मुस्लिम दुनिया पर इसका प्रभाव अधिक पड़ेगा।

सबसे दुखद बात यह है कि इसमें मुसलमान ही मुसलमान का खून बहा रहा है। मुसलमानों को चाहिए कि वे खुदा तआला के अज़ाब से डरें। सैकड़ों बच्चे मारे गए, सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए। यदि हम पश्चिमी देशों को देखें तो वहाँ यदि कुछ बच्चों की मौत हो जाए तो कई दिनों तक अखबारों में लेख लिखे जाते हैं, लेकिन यहाँ एक स्कूल पर बमबारी कर सैकड़ों बच्चों को मार दिया गया और कोई आवाज़ उठाने वाला नहीं। पहले फिलिस्तीन में यही हुआ और अब ईरान में भी यही हो रहा है। ऐसा लगता है कि उनके नज़र में मुसलमानों की जान की कोई कीमत नहीं है।

बहरहाल, खुदा तआला मुसलमानों को समझ दे कि वे समझदारी से काम लें, आपस में बैठकर समस्याओं का समाधान करें। जब वे तौहीद का दावा करते हैं तो उन्हें उसी के लिए एक होना चाहिए। केवल आरोप-प्रत्यारोप से झगड़े बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

यह कहना कि केवल मतभेदों के कारण झगड़े हो रहे हैं—कुछ हद तक यह सही हो सकता है, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इतने दयालु और सावधान थे कि जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने किसी व्यक्ति को मुनाफिक कहा, तो आपने फ़रमाया: जब तक वह "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहता है, मैं उसे कुछ नहीं कह सकता और तुम भी उसे मुनाफिक न कहो।

(संदर्भ: सहीह अल-बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब अल-मसाजिद फिल-बुयूत, हदीस: 425)

अतः छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करना वास्तव में स्वयं को नुकसान पहुँचाना है। खुदा तआला मुस्लिम दुनिया को यह समझ दे। अब भी वे समझ जाएँ और केवल मतभेदों के कारण ईरान के खिलाफ न खड़े हों।

इस्लाम तौहीद की स्थापना के लिए आया है, इसलिए उसी के लिए प्रयास करना चाहिए। बड़ी शक्तियों को अपना खुदा न समझें, क्योंकि स्थायी शक्ति केवल खुदा तआला की है। यदि इन शक्तियों को ही सब कुछ मान लिया गया तो वे धीरे-धीरे पूरी मुस्लिम दुनिया पर कब्जा कर लेंगी और वर्तमान सरकारें भी समाप्त हो जाएँगी।

अतः अभी भी समय है—होश में आने की आवश्यकता है और खुदा तआला की ओर झुकना चाहिए।

इन दुनियावी शक्तियों ने दुनिया के अमन और विशेष रूप से मुस्लिम दुनिया के अमन को नष्ट किया है और आगे भी करते रहेंगे।

क़ुरआन-ए-करीम में खुदा तआला मुसलमानों को निर्देश देते हुए फ़रमाता है:

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ۔

(सूरह अल-हुजुरात: 10)

अर्थात यदि मोमिनों के दो समूह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो सब मिलकर अत्याचारी के खिलाफ खड़े हो जाओ, यहाँ तक कि वह खुदा के आदेश की ओर लौट आए। फिर यदि वह लौट आए तो दोनों के बीच न्याय के साथ सुलह कराओ और निष्पक्षता से काम लो। निस्संदेह खुदा न्याय करने वालों को पसंद करता है।

अतः यही वह मार्गदर्शन है जो न केवल विश्व शांति के लिए आवश्यक है, बल्कि मुस्लिम दुनिया के लिए विशेष रूप से अनिवार्य है।

इसलिए न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों को अपनाएँ और इस्लामी देशों के संगठन को भी इसमें अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

सुलह कराते समय व्यक्तिगत हितों को सामने नहीं रखना चाहिए, बल्कि समस्या के मूल कारणों को समझना चाहिए। ये कारण स्पष्ट हैं कि दज्जाली शक्तियाँ हमें आपस में लड़ाना चाहती हैं। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएँ भी अब तक कोई सकारात्मक भूमिका नहीं निभा सकी हैं।

यदि हम अपने व्यक्तिगत और राष्ट्रीय हितों से ऊपर उठकर कार्य करेंगे तभी बच सकते हैं, अन्यथा हम इन्हीं शक्तियों के प्रभाव में चले जाएँगे। इसलिए सभी मुस्लिम देशों को एकजुट होकर विचार करना चाहिए।

इसी तरह आगे खुदा तआला फ़रमाता है:

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ۔

(सूरह अल-हुजुरात: 11)

अर्थात मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं। इसलिए अपने भाइयों के बीच सुलह कराओ और खुदा का डर रखो, ताकि तुम पर दया की जाए।

यदि मुसलमानों में मतभेद हो भी जाए—जैसा कि ईरान और कुछ अरब देशों के बीच कहा जाता है—तो उन्हें याद रखना चाहिए कि उनका असली संबंध इस्लामी भाईचारे का है। छोटे-छोटे विवाद इस भाईचारे को तोड़ने का कारण नहीं बनने चाहिए।

अतः अरब देशों और ईरान की सरकार को चाहिए कि वे सुलह का रास्ता निकालें।

चीन और कुछ अन्य देशों, जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है, ने सुलह के लिए अपना योगदान देने की पेशकश की है। काश कि मुस्लिम दुनिया इस बात को समझे। खुदा तआला उन्हें समझ प्रदान करे। बहरहाल—

हमारा कार्य यही है कि विशेष रूप से मुस्लिम दुनिया और निर्दोष लोगों के लिए दुआ करें। रमज़ान के महीने में खास तौर पर केवल अपनी व्यक्तिगत दुआओं पर ध्यान न दें, बल्कि पूरी उम्मत-ए-मुस्लिम के लिए भी दुआ करें। खुदा तआला उन्हें समझ दे कि दुनिया में, और विशेष रूप से मुस्लिम दुनिया में, शांति स्थापित हो सके। मुसलमान, मुसलमान की गर्दन काटने वाला न बने। जो लोग आपस में लड़कर गलत तरीकों से एक-दूसरे को मार रहे हैं, वे इस कार्य द्वारा खुदा तआला की नाराज़गी का कारण बन रहे हैं। ऐसे लोग न केवल इस संसार में हानि उठाएँगे, बल्कि अगले संसार में भी नुकसान उठाने वाले होंगे। इसलिए इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और इसके लिए हमें विशेष रूप से दुआ करनी चाहिए। खुदा तआला हमें सच्चे मन से दुआ करने की भी तौफीक प्रदान करे।

आज मैं कुछ नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा।

कुछ मरहूम व्यक्तियों का उल्लेख करता हूँ। पहला उल्लेख श्रीमान साहिबज़ादी अमतुल-जमील साहिबा का है, जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सबसे छोटी पुत्री थीं और मरहूम नासिर मुहम्मद सियाल साहिब की पत्नी थीं। चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो यहाँ मुबल्लिग़ भी रहे, उनकी बहू थीं। लगभग 89 वर्ष की आयु में पिछले दिनों उनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा मोसिया थीं। वे हज़रत सैयदा मरियम बेगम साहिबा (उम्म-ए-ताहिर) की सबसे छोटी पुत्री थीं और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की संतान में भी सबसे छोटी थीं।

उनका निकाह 1955 में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्वयं पढ़ाया था। उस समय वे बीमार थे और बिस्तर पर लेटे हुए ही निकाह का ख़ुत्बा दिया और दुआ करवाई। इस अवसर पर घर के कुछ ही लोग उपस्थित थे। लिखा गया है कि इस पूरी रस्म के दौरान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी पर एक विशेष भावनात्मक स्थिति रही। फिर 1956 में उन्हीं ने उनकी शादी करवाई और दुआ के साथ विदा किया।

उनकी चार संतानें हैं। एक पुत्र ज़ाहिर मुस्तफ़ा, जिन्हें उनकी बहन साहिबज़ादी अमतुल-क़य्यूम साहिबा को दे दिया गया था, जिन्होंने बचपन से उनका पालन-पोषण किया। एक बेटी यासमीन मलिक, जो कनाडा में हैं। सादिया अहमद, जो यूके में रहती हैं। सोफ़िया अहमद, जो रब्वा में हैं और नाज़िर ख़िदमत दरवेशाँ मिर्ज़ा समद अहमद की पत्नी हैं। मरहूम नासिर मुहम्मद सियाल साहिब वक़्फ़-ए-ज़िंदगी थे। जब फ़ज़ल उमर रिसर्च इंस्टिट्यूट स्थापित हुआ तो उन्हें उसमें शोध कार्य के लिए नियुक्त किया गया। बाद में संस्थान बंद होने पर उन्हें निजी कार्य की अनुमति दे दी गई।

उनकी बेटी सोफ़िया लिखती हैं कि वे गरीबों का बहुत ध्यान रखने वाली थीं। अन्य लोगों ने भी लिखा कि वे जरूरतमंदों की सहायता करने वाली थीं। उनके जीवन

में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से जुड़े कई घटनाएँ और सपने भी हैं, जिनसे पुराना इतिहास भी जुड़ जाता है।

एक घरेलू घटना में उन्होंने बताया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जूतियाँ बाहर रखते थे, जिन्हें कोई साफ कर देता था। उन्होंने अपनी जूतियाँ भी वहीं रख दीं। जब उन्होंने देखा तो पूछा यह किसकी जूती है? अंत में उन्होंने बताया कि यह मेरी है। इस पर उन्होंने कहा कि आगे से यदि तुम स्वयं पॉलिश नहीं कर सकतीं तो मुझे दे दिया करो, लेकिन जमाअती कार्यकर्ता से पॉलिश न करवाओ।

वे दान और सदक़ा देने वाली तथा गरीबों का ध्यान रखने वाली थीं। उनके पुराने खातों में गरीबों की सहायता के लिए नियमित खर्च दर्ज था।

जब वे सात वर्ष की थीं, उनकी माता उम्म-ए-ताहिर का देहांत हो गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक घटना लिखी कि बच्ची रो रही थी। उन्होंने समझाया कि "तुम्हारी माँ खुदा तआला के पास गई हैं, वहाँ उन्हें आराम मिलेगा। यह खुदा की इच्छा है।" इसके बाद वह बच्ची शांत हो गई और फिर कभी उस तरह नहीं रोई। बल्कि अगले दिन जब उनकी बड़ी बहन बेहोश हो गई, तो उसने समझाते हुए कहा कि "अब्बा जान कहते हैं कि यह खुदा की इच्छा थी।"

फिर उन्होंने दुआ की कि "हे मेरे पालनहार! इस बच्ची को हर दुख से सुरक्षित रखना।"

(मेरी मरियम, अनवार-उल-उलूम, जिल्द 17, पृष्ठ 365-366)

वे चंदों में नियमित थीं, अपनी संपत्ति का पूरा हिसाब रखती थीं, और पड़ोसियों के घरों में मृत्यु होने पर भोजन भिजवाती थीं। वे आने-जाने वालों से भी कहती थीं कि उनके लिए दुआ करें कि उनका अंत अच्छा हो।

उनकी नातिन नुसरत बताती हैं कि वे नमाज़ के समय से पहले तैयारी कर बैठ जातीं और बड़ी व्याकुलता से समय का इंतज़ार करतीं, लंबी-लंबी दुआएँ करतीं, यहाँ तक कि उन्होंने लोगों के नामों की सूची बना रखी थी जिनके लिए दुआ करनी होती थी।

हादी अली साहिब ने भी लिखा है कि उनके साथ पुराने समय की कई घटनाएँ और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के सपने जुड़े हुए हैं। एक बार उन्होंने बताया कि याला के दौरान उन्होंने देखा कि वे उँगलियों पर कुछ गिन रहे थे। पूछने पर बताया कि वे दुनिया भर में अपने मुबल्लिग़ों की संख्या का अनुमान लगा रहे हैं और चाहते हैं कि लाखों मुबल्लिग़ हों ताकि पूरी दुनिया को इस्लाम का सही संदेश पहुँचाया जा सके।

एक सपना (रूया) जून 1948 का है, जिसमें उन्होंने एक ऊँचा सफेद मीनार देखा और अमतुल-जमील साहिबा को वहाँ बैठे देखा। एक बड़ा साँप उनकी ओर बढ़ा, लेकिन दुआ के बाद वह दूर हट गईं और सुरक्षित रहीं। इसे एक शुभ संकेत बताया गया।

(माख़ूज़ अज़ रुइया व कुशूफ़ सैय्यदना महमूद, पृष्ठ 416-417)

(माख़ूज़ अज़ अल-फ़ज़ल, जिल्द 2, संख्या 287, 19 दिसंबर 1948, पृष्ठ 3

और भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के कुछ स्वप्न हैं जिनमें उनका उल्लेख आता है। खुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे।

दूसरा जनाज़ा, जिसका उल्लेख करना है, हॉलैंड के

श्रीमान डॉक्टर रशीद अहमद ख़ान साहिब

का है, जो श्रीमान निज़ामुद्दीन साहिब के पुत्र थे। पिछले दिनों 91 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। खुदा तआला के फ़ज़्ल से वे मोसी थे और उनके चार बेटे और चार बेटियाँ हैं। डॉक्टर रशीद साहिब के पिता निज़ामुद्दीन साहिब, सूबा सरहद के पूर्व अमीर डॉक्टर फ़तह दीन साहिब के छोटे भाई थे (संदर्भ: सूबा ख़ैबर पख़्तूनख़्वा (पूर्व सूबा सरहद) में अहमदियत का प्रवेश, पृष्ठ 107) और उन्हीं के माध्यम से उनके परिवार में अहमदियत आई।

1905 में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना में एक भाषण दिया। उस समय डॉक्टर फ़तह दीन साहिब विद्यालय में पढ़ते थे। विद्यालय के अध्यापकों ने विद्यार्थियों को सख़्ती से मना किया था कि कभी भी उनकी तक़रीर सुनने न जाना, यह जादूगर है और तुम्हें अपने वश में कर लेगा। जैसा कि सदैव नबियों पर आरोप लगाया जाता है, मौलवी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर भी यही आरोप लगाते थे। बहरहाल, फ़तह दीन साहिब कहते हैं कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का भाषण सुनने चले गए और उनके चेहरे को देखकर छोटी आयु में ही उन्हें विश्वास हो गया कि ये सत्य हैं। तत्पश्चात शिक्षा पूर्ण करके 1914 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में जाकर उन्होंने बैअत की।

वे बहुत नेक स्वभाव के थे। मरहूम रशीद साहिब भी अत्यंत नेक स्वभाव के, सरल, मिलनसार, खुदा से डरने वाले, संबंध निभाने वाले, दूसरों के लिए स्वयं कष्ट उठाने वाले, निडर और साहसी थे। ख़िलाफ़त के अत्यंत प्रेमी थे और हर समय हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहते थे। ग़रीबों की देखभाल और ज़रूरतमंदों की सहायता बिना बताए किया करते थे। कई नए बैअत करने वालों पर विरोधियों द्वारा झूठे मुक़दमे बना दिए जाते, तो उनकी ज़मानत के लिए भी आगे आते थे और फ़ुरक़ान फ़ोर्स में भी शामिल रहे।

उन्हें यह सौभाग्य भी प्राप्त हुआ कि उन्हें, उनके ससुर अब्बास ख़ान साहिब को और उनके भाई मंज़ूर साहिब को सूबा सरहद में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने वक़्फ़-ए-जदीद के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में भेजा और यह ज़िम्मेदारी दी कि पुराने अहमदी परिवारों से संपर्क पुनः स्थापित करें और तबलीग़ का कार्य करें। उन्होंने यह कार्य बहुत अच्छे ढंग से पूरा किया।

उन्हें तबलीग़ का बहुत शौक था। एक मित्र दौलत ख़ान साहिब को तबलीग़ की, तो उन्होंने बैअत कर ली। इस पर उनके विरुद्ध मुक़दमा भी चल पड़ा। उनकी गिरफ़्तारी भी हो गई। ज़मानत के लिए कोई आगे नहीं आ रहा था, ज़मानती काग़ज़ स्वीकार नहीं हो रहे थे, तो रशीद साहिब स्वयं अपने दामाद को लेकर वहाँ गए। वहाँ मौलवियों का पाँच हज़ार लोगों का जुलूस था। उन्होंने उन पर पत्थरबाज़ी शुरू कर दी। उनके दामाद के सिर पर पत्थर लगा, वे गिर पड़े, फिर उन्हें मारा गया और अंततः वहीं उनकी शहादत हो गई। पुलिस ने भी, जैसा कि वे कहते हैं कि शैतानों का काम होता है कि हम सवाब कमा रहे हैं, उस शव को लातें मारनी शुरू कर दीं।

रशीद साहिब को भी बुरी तरह मारा गया और उनके शरीर की लगभग सारी हड्डियाँ तोड़ दी गईं। उन्हें बहुत चोटें आईं। उनके निशान बाद में भी दिखाई देते रहे। चेहरे पर भी निशान थे और बाजू भी मुड़े हुए थे। किन्तु खुदा तआला ने उन्हें बचाया और मारने वाले उन्हें मृत समझकर छोड़ गए। बाद में पुलिस उनकी लाश को ले जा रही थी। जब अस्पताल के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा कि मैं जीवित हूँ और मुझे अमुक स्थान पर पहुँचा दो। डॉक्टरों ने भी देखकर आश्चर्य किया कि ये जीवित कैसे हैं। खुदा तआला ने उन्हें जीवित रखा और इन चोटों के बावजूद वे तीस वर्ष से अधिक जीवित रहे और सक्रिय रहे।

उन्होंने पुलिस से कहा कि मुझे पेशावर पहुँचा दो। वहाँ पहुँचना कठिन था, पर उन्होंने कहा कि जो धन लेना है ले लो और मुझे पहुँचा दो। अंततः पुलिस अधिकारी मान गया और उन्हें पेशावर पहुँचाया गया। फिर वे रब्वा आए, उनका उपचार हुआ और खुदा तआला के फ़ज़्ल से उन्हें नया जीवन मिला। जहाँ उन्हें मृत समझकर मुर्दाघर ले जाया जा रहा था, वहीं खुदा तआला ने उन्हें तीस वर्षों तक और जीवित रखा।

वे हॉलैंड में भी रहे और वहाँ भी जमाअत के कार्य करते रहे। 1974 में भी विरोधियों ने उन पर पिस्तौल तान ली थी। तब उन्होंने बड़े साहस से कहा कि "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" तो मैं पहले ही पढ़ता हूँ, इसी पर मेरा ईमान है, फिर मैं कैसे मुसलमान बनूँ? उन्होंने कहा कि मिर्ज़ा साहिब को गालियाँ दो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं गालियाँ नहीं दूँगा, यह इस्लाम नहीं है। मैं दुरूद पढ़ने वाला हूँ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा पर चलने वाला हूँ, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

फिर उन्होंने एक सहाबी का प्रसंग सुनाया कि जब ग़ज़वा-ए-उहुद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर फैल गई, तो एक सहाबी ने कहा कि मेरे और जन्नत के बीच तो केवल एक खजूर है, उसे एक ओर फेंक दिया और अकेले दुश्मन पर हमला कर दिया, यहाँ तक कि उनके शरीर के टुकड़े कर दिए गए। उन्होंने कहा कि मेरे और तुम्हारे बीच तो वह खजूर भी नहीं है, क्योंकि तुमने मेरी छाती पर बंदूक रखी हुई है, तुम चला दो और मुझे शहीद कर दो, लेकिन मैं वह बातें नहीं

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

कहूँगा जो तुम कहते हो कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियाँ दो। इस प्रकार उन्होंने बड़ा साहस दिखाया। ख़ुदा तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे, उनके दर्जे बुलंद करे और उनकी संतानों को भी नेकियाँ अपनाने की तौफ़ीक दे।

तीसरा उल्लेख श्रीमती ज़ैनब बीबी साहिबा का है, जो बशीर अहमद साहिब मरहूम, पूर्व सदर जमाअत और इमाम मस्जिद चक 275 करतारपुर की पत्नी थीं। पिछले दिनों 85 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से वे मोसिया थीं। उनके पिता अली मुहम्मद साहिब मस्जिद दार-उज़-ज़िक्र फ़ैसलाबाद के ख़ादिम थे।

वे बहुत दुआ करने वाली, तहज्जुद पढ़ने वाली, नमाज़ की पाबंद, क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिदिन तिलावत करने वाली, मेहमाननवाज़, ख़िलाफ़त से गहरी मोहब्बत रखने वाली नेक स्वभाव की महिला थीं। ग़रीबों की सहायता करती थीं और ख़ुत्बा जुमआ नियमित रूप से सुनतीं तथा घरवालों को भी सुनाती थीं।

उनके पीछे तीन बेटे और चार बेटियाँ हैं। कई पोते-पोतियाँ वक़्फ़-ए-ज़िंदगी हैं। उनकी बेटी अमतुर्रशीद साहिबा, जो ताहिर अहमद सैफ़ी साहिब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला की पत्नी हैं, जो लुसाका, ज़ाम्बिया में सेवा कर रहे हैं—वे उस समय वहीं थीं जब उनकी माता का देहांत हुआ, इसलिए वे अंतिम समय में शामिल नहीं हो सकीं और जनाज़ा भी नहीं देख सकीं। ख़ुदा तआला उन्हें सब्र और हिम्मत दे तथा मरहूमा से मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे।

★ ★ ★

वाक़फ़ीन-ए-नौ और ग़ैर-वाक़फ़ीन-ए-नौ छात्र दीन की सेवा के जज़्बे के साथ जामिया अहमदिया में दाख़िला लें

जामिया अहमदिया कादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित वह पवित्र संस्थान है जहाँ से अब तक सैकड़ों उलेमा और मुबल्लिगीन शिक्षा प्राप्त कर इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने का पवित्र कर्तव्य निभा रहे हैं। सैय्यदना हज़ूर अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी छात्रों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थापित इस पवित्र धार्मिक संस्थान से शिक्षा प्राप्त कर सिलसिले की सेवा की ओर ध्यान आकर्षित कराया है। अतः सैय्यदना हज़ूर अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इर्शादात की रोशनी में अधिक से अधिक वाक़फ़ीन-ए-नौ और ग़ैर-वाक़फ़ीन-ए-नौ छात्रों को जामिया अहमदिया में दाख़िला लेकर धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर सिलसिले की सेवा के लिए स्वयं को प्रस्तुत करना चाहिए। इसलिए जो छात्र जामिया अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं, वे शोबा वक़्फ़-ए-नौ भारत या नज़ारत तालीम से संपर्क करें और जल्द से जल्द जामिया अहमदिया के दाख़िला फॉर्म को भरकर 30 जून तक दफ़्तर वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) में भेजें।

दाख़िले की शर्तें:

1. मैट्रिक पास छात्र के लिए आयु सीमा 17 वर्ष और 2+ पास छात्र के लिए 19 वर्ष है। आयु सीमा में हुफ़्फ़ाज़ कराम को विशेष रूप से छूट दी जा सकती है।

2. जामिया अहमदिया में दाख़िले के लिए नेशनल करियर प्लानिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत छात्रों का इंटरव्यू और लिखित परीक्षा लेगी और जामिया अहमदिया के लिए चयन करेगी। लिखित परीक्षा में क़ुरआन मजीद, इस्लाम, अहमदियत, धार्मिक ज्ञान, उर्दू, अंग्रेज़ी और सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न होंगे।

3. लिखित परीक्षा और इंटरव्यू में सफल होने वाले छात्रों का नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल टेस्ट होगा। लिखित परीक्षा, इंटरव्यू और मेडिकल टेस्ट में पास होने वाले छात्रों को सैय्यदना हज़ूर अनवर की मंज़ूरी से जामिया अहमदिया में दाख़िला दिया जाएगा।

4. ग्रेजुएशन पास छात्रों को जामिया अहमदिया में दाख़िले की प्राथमिकता दी जाएगी।

दाख़िला फॉर्म मंगवाने के लिए पता:

waqfenau@qadian.in

वक़्फ़-ए-नौ डिपार्टमेंट (नज़ारत तालीम)

सिविल लाइन, कादियान

जिला: गुरदासपुर, पंजाब (भारत) पिन: 143516

संपर्क: 01872-500975, 9988991775

(सदर नेशनल करियर प्लानिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

पृष्ठ 11 का शेष

आना पड़ा था, वह 'सुराक़ा' और अन्य लोगों का आपके पीछे इसलिए घोड़े दौड़ाना कि आप का वध करके या जीवित किसी भी अवस्था में मक्का वालों तक पहुँचा दें तो वे सौ ऊँटों के स्वामी हो जाएँगे, उस समय आप का 'सुराक़ा' से कहना— सुराक़ा उस समय तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किस्रा के कंगन होंगे। कितनी बड़ी भविष्यवाणी थी कितना उज्ज्वल भविष्य था। हज़रत उमररज़ि. ने अपने सामने किस्रा के कंगन देखे तो उनकी आँखों के सामने ख़ुदा की क़ुदरत घूम गई। उन्होंने कहा— 'सुराक़ा' को बुलाओ। सुराक़ा बुलाए गए तो हज़रत उमररज़ि. ने उन्हें आदेश दिया कि वह किस्रा के कंगन अपने हाथों में पहनें। सुराक़ा ने कहा— हे ख़ुदा के रसूल के ख़लीफ़ा ! मुसलमानों के लिए सोना पहनना वर्जित है। हज़रत उमररज़ि. ने फ़रमाया— हाँ वर्जित तो अवश्य है परन्तु इन अवसरों के लिए नहीं। अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को तुम्हारे हाथ में सोने के कंगन दिखाए थे, या तो तुम यह कंगन पहनोगे या मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। सुराक़ा की आपत्ति तो मात्र शरीअत की समस्या के कारण थी अन्यथा वह स्वयं भी रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी को पूरा होते देखने के लिए उत्सुक था। सुराक़ा ने वे कंगन अपने हाथों में पहन लिए मुसलमानों ने इस महान भविष्यवाणी को पूरा होते अपनी आँखों से देखा। मक्का से भाग कर निकलने वाला रसूल अब संसार का बादशाह था। वह स्वयं इस संसार में मौजूद नहीं था परन्तु इस्लाम के दास उसकी भविष्यवाणी को पूर्ण होते देख रहे थे।

★ ★ ★

जमाअत-ए-अहमदिया भारत में रमज़ान मुबारक के दिन और रात

नीचे दी गई जमाअतों से रमज़ान मुबारक और ईद-उल-फ़ित्र के संबंध में रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं।

इन सभी जमाअतों में नमाज़ तरावीह, दर्स-उल-क़ुरआन और ग़रीबों में फ़ित्राना बाँटने के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जमाअतों में दर्स-ए-हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात का भी प्रबंध किया गया और कुछ लोगों ने सुन्नत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हुए मस्जिदों में एतिकाफ़ भी किया और शव्वाल का चाँद दिखाई देने पर ईद-उल-फ़ित्र का आयोजन किया गया।

खुदा तआला इन सभी जमाअतों के इन आध्यात्मिक कार्यक्रमों को स्वीकार फरमाए और अपने फ़ज़्ल से रमज़ान की बरकतों से लाभान्वित करे। आमीन।

जमाअतों के नाम इस प्रकार हैं:

(1) जमाअत अहमदिया केरंग, ज़िला खोरधा

(2) जमाअत अहमदिया भरतपुर (बंगाल)

(3) जमाअत अहमदिया चिंताकोंटा (तेलंगाना)

(4) जमाअत अहमदिया भद्रक (उड़ीसा)

(5) जमाअत अहमदिया त्रिशूर (केरल)

(6) ज़िला विजय नगर बल्लारी (कर्नाटक)

(7) ज़िला अलीपुरद्वार (बंगाल)

(8) ताराकोट (उड़ीसा)

(9) जमाअत अहमदिया पंकाल (उड़ीसा) (इदारा)

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

इन दिनों यह अत्यंत आवश्यक है कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के भाषणों और पत्रों का अधिक से अधिक प्रचार किया जाए, ताकि दुनिया शांति के संदेश को सुने। हज़ूर हर जुमे के दिन दुआ की प्रेरणा देते हैं, इसलिए आवश्यक है कि हम अहमदी नियमित रूप से दुआ करें और खुदा तआला की याद की ओर ध्यान दें, ताकि दुनिया से भय और अशांति का वातावरण दूर हो और शांति और सुरक्षा की सुखद हवाएँ चलने लगें.

★ ★ ★

सालाना इजतेम जैली तनज़ीम क़ादियान 2026

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सालाना इज्तेम मज्लिस खुद्दमुल् अहमदिया, मज्लिस आँसारूल्लाह, और लज्ना ईमाइल्लाह के सालाना इज्तेम के लिए तिथि 23,24,25 अक्टूबर 2026 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक इज्तेमा में शामिल होने हर संभव कोशिश करें।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अर्थात तुम दुश्मन की बुराई का जवाब अत्यंत अच्छे व्यवहार से दो, क्योंकि इसका परिणाम यह होगा कि वह व्यक्ति, जिसके साथ तुम्हारी दुश्मनी है, तुम्हारे इस सुंदर व्यवहार को देखकर लज्जित होगा और वह तुम्हारा घनिष्ठ मित्र बन जाएगा।

अर्थात बताया गया कि सज़ा अंततः इसलिए दी जाती है कि मनुष्य दूसरों के नुकसान से बच जाए और उसे अपने सुधार का विचार आए। लेकिन दूसरों के नुकसान से बचने का यही एक तरीका नहीं कि उसे सज़ा दी जाए, बल्कि यदि क्षमा से उसका सुधार हो सकता हो तो बेहतर यही है कि उसे क्षमा कर दिया जाए। और इस बात से भयभीत न हो कि इसका कोई बुरा परिणाम निकलेगा, क्योंकि दूसरा व्यक्ति इस व्यवहार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता—उसकी आँखें झुक जाएँगी और वह तुम्हारी मित्रता और प्रेम का दावा करने लगेगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

इस स्थान पर "हमज़ात-ए-शयातीन" में किसी शैतानी फुसफुसाहट का उल्लेख नहीं है, बल्कि यहाँ उन दुश्मनों को शैतान कहा गया है जो इस्लाम के विरोधी थे और जो रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विभिन्न प्रकार की तकलीफें पहुँचाते रहते थे। अतः "हम्ज़" के एक अर्थ निचोड़ने अर्थात कष्ट देने के भी होते हैं। और "हमज़तुश्शै' फ़ी कफ़्फ़ी" का अर्थ होता है कि मैंने किसी वस्तु को अपने हाथ में दबाकर निचोड़ डाला (संदर्भ: मफ़रूदात इमाम राग़िब रहमहुल्लाह)।

अतः

رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

में यह दुआ सिखाई गई है कि ऐ खुदा तआला! मुझे शैतान के चेलों के उन आक्रमणों से बचा जो मुझे कुचल डालने के लिए उसकी ओर से हो रहे हैं। बल्कि मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझ पर हावी होना तो दूर, मेरे पास भी न आ सकें, अर्थात वे मुझे किसी प्रकार की तकलीफ न दे सकें।

चूंकि इसके बाद की आयत

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

भी इन्हीं अर्थों पर संकेत करती है और बताती है कि यहाँ किसी शैतानी फुसफुसाहट का नहीं, बल्कि उन मानव रूपी शैतानों का उल्लेख है जो रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट पहुँचाते थे, अन्यथा आगे-पीछे का पूरा संदर्भ असंगत हो जाता।

(तफ़सीर कबीर, भाग छठा, तफ़सीर सूरह अल-मोमिनून, आयत संख्या 97-98)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

प्रेम के मानक को बताया है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने जानी दुश्मन के साथ भी न्याय करेगा और सत्य व निष्पक्षता को नहीं छोड़ेगा, वही वास्तव में सच्चा प्रेम करने वाला है।

(नूर-उल-क़ुरआन, नंबर 2, पृष्ठ 22-21)(संदर्भ: तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, तफ़सीर सूरह अल-मायदा, आयत संख्या 9)

★ ★ ★

भारत की जमाअतों में यौम-ए-मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसों का आयोजन

नीचे दी गई जमाअतों में 23 मार्च 2026 के दिन यौम-ए-मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसों का आयोजन किया गया। इस दिन जमाअतों में नमाज़ तहज्जुद अदा की गई और मस्जिदों तथा नमाज़ सेंटर्स में जलसे आयोजित हुए। कुछ जमाअतों में ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल के दिलचस्प मुकाबले भी हुए और इनाम भी बाँटे गए।

(1) जमाअत अहमदिया ज़िला विजय नगर (कर्नाटक)
(2) जमाअत अहमदिया ताराकोट (उड़ीसा)
(3) महमूदाबाद (उड़ीसा)
(4) शेरपुर (मुर्शिदाबाद, बंगाल)
(5) चिंताकोंटा (तेलंगाना)
(6) पंकाल (उड़ीसा)
(7) सरी पार (उड़ीसा)
(8) खजूरिया पाड़ा (उड़ीसा)
(9) देओदरग (कर्नाटक)
(10) भरतपुर (बंगाल)
(11) ज़िला अलीपुरद्वार (बंगाल)
(12) ज़िला चन्टी

इन जलसों में विशेष रूप से शर्तें बैअत और एक अहमदी की ज़िम्मेदारी के विषय में प्रकाश डाला गया।

ड्राइवर पद के लिए घोषणा
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

शर्तें

(1) उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम हो।

(2) उम्मीदवार कम से कम दसवीं पास हो।

(3) उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना अनिवार्य है।

(4) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि उसके पास किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव हो। साथ ही अपनी आवेदन-पत्र के साथ उस संस्था का अनुभव प्रमाण-पत्र (एक्सपीरियंस सर्टिफिकेट) प्रस्तुत करना भी अनिवार्य है, जहाँ से उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।

(5) उम्मीदवार के लिए अपना जन्म प्रमाण-पत्र जमा करना आवश्यक है।

(6) उम्मीदवार के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना अनिवार्य होगा।

(7) लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग परीक्षण भी लिया जाएगा।

(8) उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल क़ादियान से प्राप्त चिकित्सकीय फिटनेस प्रमाण-पत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।

(9) उम्मीदवार ड्राइवर को नियुक्ति के बाद द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता और अन्य सुविधाएँ दी जाएँगी।

(10) चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को क़ादियान में प्रारंभिक पाँच वर्षों तक अपने निवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(11) उम्मीदवार के आने-जाने का यात्रा खर्च स्वयं वहन करना होगा।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

रूमियों की विजय की भविष्यवाणी

इन्हीं दिनों में क़ैसर और किसरा के मध्य एक भीषण युद्ध हुआ और किसरा को विजय प्राप्त हुई। शाम में ईरानी सेनाएं फैल गईं, यरुश्लम नष्ट कर दिया गया, यहाँ तक कि ईरानी सेनाएं यूनान और एशियाई कोचक तक पहुँच गईं तथा ईरानी सेनापतियों ने बासफ़ोरस के आरम्भ में क़ुस्तुनतुनिया से दस मील की दूरी पर अपने तम्बू लगा दिए। इस घटना पर मक्का के लोगों ने ख़ुशियाँ मनाना आरम्भ किया और कहा कि ख़ुदा का निर्णय प्रकट हो गया है। मूर्तिपूजक ईरानियों ने ईसाइयों को पराजित किया। उस समय ख़ुदा तआला की ओर से आप[स.] को सूचना दी गई कि —

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۙ فِيْ
بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ
بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ
اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ○

अर्थात् रूमी सेनाएं अरब के निकटवर्ती देशों में पराजित हो गई हैं परन्तु अपनी पराजय के पश्चात् उन्हें विजय प्राप्त होगी कुछ वर्षों के अन्दर-अन्दर। ख़ुदा का ही शासन संसार में पहले भी प्रचलित था और भविष्य में भी चलता रहेगा। जब वह विजय की घड़ी आएगी उस समय मोमिनों को भी ख़ुदा की कृपा से प्रसन्नता प्राप्त होगी। ख़ुदा जिन्हें चुन लेता है उनकी सहायता करता है। वह बड़ा ही तेजस्वी और दयालु है। यह उस ख़ुदा का वादा है जो अपने वादों में फेरबदल नहीं करता, परन्तु अधिकांश लोग ख़ुदा की शक्तियों से अनभिज्ञ हैं।

ख़ुदा ने कुछ ही वर्षों के पश्चात यह भविष्यवाणी पूरी कर दी। एक ओर रूमियों ने ईरानियों को पराजित करके अपने देश को स्वतंत्र करा लिया तथा दूसरी ओर जैसा कि कहा गया था, उन्हीं दिनों में मुसलमानों का मक्का के लोगों के विरुद्ध विजयों का सिलसिला प्रारम्भ हुआ, जब कि मक्का के लोग यह समझ रहे थे कि उन्होंने लोगों को मुसलमानों की बातें सुनने से रोक कर और मुसलमानों पर अत्याचार करने पर उत्तेजित करके इस्लाम का अन्त कर दिया है। ख़ुदा की वाणी निरन्तर इस्लाम की विजयों की सूचनाएं दे रही थी और बता रही थी कि मक्का वालों के विनाश का समय निकट से निकटतर आ रहा है। अतः उन्हीं दिनों में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने बड़े सशक्त शब्दों में ख़ुदा तआला की इस वह्यी (ईशवाणी) की घोषणा की कि —

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ
الْاُوْلٰى ○ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا
رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ○ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ
فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ○

अर्थात् मक्का वाले कहते हैं कि क्यों मुहम्मद (स.अ.व.) अपने रब्ब के पास से कोई निशान हमारे लिए नहीं लाता। क्या पहले नबियों की भविष्यवाणी जो उसके पक्ष में हैं वे उन के लिए पर्याप्त निशान नहीं है। यदि हम अपने सन्देश से पूर्ण रूप से अवगत किए बिना मक्का वालों को तबाह कर देते तो मक्का वाले कह सकते थे कि हे हमारे रब्ब ! तूने क्यों हमारी ओर रसूल न भेजा कि हम अपने मान-सम्मान छीने जाने पर तिरस्कृत होने से पूर्व तेरे आदेशों का पालन करते। तू कह दे ! प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक समय निश्चित है जिसकी उसे प्रतीक्षा करना पड़ती है। अतः तुम भी उस समय की प्रतीक्षा करो जब समझाने का प्रयास चरम सीमा को पहुँच जाएगा तब तुम निश्चय ही जान लो कि ख़ुदा तआला के दर्शाए सीधे मार्ग पर कौन चल रहा है।

ख़ुदा तआला की प्रतिदिन नई वाणी आ रही थी जो इस्लाम की उन्नति और काफ़िरों के विनाश की ख़बरें दे रही थी। एक ओर मक्का वाले अपनी शक्ति और वैभव को देखते थे और दूसरी ओर मुहम्मद (स.अ.व.) और उनके साथियों की कमज़ोरी को देखते थे और फिर मुहम्मद (स.अ.व.) की वह्यी में ख़ुदा तआला की सहायता और मुसलमानों की सफलताओं की ख़बरें पढ़ते थे तो आश्चर्य चकित होकर सोचते थे कि क्या वे पागल हो गए हैं या मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) पागल हो गया है। मक्का वाले तो ये आशाएं लगाए बैठे थे कि हमारे अत्याचारों और हमारी अन्यायपूर्ण धृष्टता के कारण अब मुसलमानों को हताश हो कर हमारी ओर आ जाना चाहिए तथा मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) को स्वयं भी और उनके साथियों को भी उनके दावे में सन्देह पैदा हो जाने चाहिएं जब कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) यह घोषणा कर रहे थे

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۙ وَّمَا
هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ○

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۙ لَاَخَذْنَا مِنْهُ
بِالْيَمِيْنِ ۙ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۚ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ○ وَ
اِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ○ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ○ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ○ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ○

हे मक्का वालो ! जिन विचारों में तुम पड़े हो वह उचित नहीं। मैं शपथ खा कर कहता हूँ उन वस्तुओं की जो तुम्हें दिखाई दे रही हैं और उनकी भी जो अभी तुम्हारी निगाहों से ओझल हैं कि यह क़ुर्आन एक आदरणीय नबी के मुख से तुम्हें सुनाया जा रहा है, यह किसी कवि की वाणी नहीं परन्तु तुम्हारे हृदय में ईमान कम ही पैदा होता है। यह किसी ज्योतिषी की तुकबन्दी नहीं है। परन्तु खेद तुम कम ही नसीहत प्राप्त करते हो। यह समस्त लोकों के स्रष्टा ख़ुदा की ओर से उतारा गया है और हम जो समस्त लोकों के प्रतिपालक हैं तुम से कहते हैं कि यदि यह एक आयत भी झूठी बना कर हम से सम्बद्ध करता तो हम उसे दाहिने हाथ से पकड़ लेते और फिर उसकी कंठ-धमनी (शाह रग) काट देते और यदि तुम सब इकट्ठे होकर भी उसे बचाना चाहते तो न बचा सकते, परन्तु यह क़ुर्आन तो ख़ुदा से डरने वालों के लिए एक नसीहत है और हम जानते हैं कि तुम में इस क़ुर्आन के झुठलाने वाले भी मौजूद हैं, परन्तु हम यह भी जानते हैं कि उसकी शिक्षा उसके इन्कार करने वालों के हृदयों में ईर्ष्या को जन्म दे रही है और वे कह रहे हैं कि काश यह शिक्षा हमारे पास होती ! हम यह भी जानते हैं कि जो बातें इस क़ुर्आन में बताई गई हैं वे अक्षरशः पूरी होकर रहेंगी। अतः हे मुहम्मद (स.अ.व.) इन लोगों के विरोधों की परवाह न कर तथा अपने महानतम रब्ब के नाम की महिमा का गान करता चला जा।

अन्ततः तीसरा हज भी आ पहुँचा तथा मदीना के हाजियों का जत्था मुसलमानों की एक

बड़ी संख्या पर आधारित मक्का में आया। मक्का वालों के विरोध के कारण मदीना के लोगों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से पृथक रूप से मिलने की इच्छा प्रकट की। अब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को भी इस बात का आभास हो चुका था कि शायद हिजरत (प्रवास) मदीना की ओर ही विधि-लिखित है। आप ने अपने विश्वस्त परिजनों के सामने अपने विचार रखे और उन्होंने आपस. को समझाना आरम्भ किया कि आप ऐसा न करें। मक्का वाले शत्रु ही सही फिर भी उस में आप के परिजनों में से बड़े-बड़े प्रभावशाली लोग मौजूद हैं। न मालूम मदीना में क्या हो और वहाँ आप के परिजन आप की सहायता कर सकें या न कर सकें परन्तु चूंकि आप समझ चुके थे कि ख़ुदा का निर्णय यही है। आप ने अपने परिजनों की बातों को अस्वीकार कर दिया और मदीना जाने का निर्णय कर लिया।

अर्ध रात्रि के पश्चात् अक़्वा घाटी में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) और मदीना के मुसलमान एकत्र हुए। अब आप के साथ आपके चाचा अब्बास भी थे। इस बार मदीना के मुसलमानों की संख्या तिहत्तर① थी। उनमें से बासठ 'ख़ज़रज' क़बीले के थे और ग्यारह 'औस' के थे इस दल में दो स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं जिन में से एक बनी नज्जार क़बीले की उम्मे अम्मारःरज़ि. भी थीं। चूंकि मुसअबरज़ि. के द्वारा उन लोगों तक इस्लाम की विस्तृत शिक्षा पहुँच चुकी थी, ये लोग ईमान और विश्वास से परिपूर्ण थे। बाद की घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया कि ये लोग भविष्य में इस्लाम के स्तम्भ सिद्ध होने वाले थे। उम्मे अम्मारःरज़ि. जो उस दिन सम्मिलित हुईं, उन्होंने अपनी सन्तान में इस्लाम प्रेम की भावना इस सीमा तक भर दी थी कि उनका बेटा हबीबरज़ि. जब रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के स्वर्गवास के पश्चात् मुसैलिमा कज़्ज़ाब की सेना के द्वारा क़ैद किया गया तो मुसैलिमा ने उसे बुला कर पूछा कि क्या तू गवाही देता है कि मुहम्मद (स.अ.व.) अल्लाह के रसूल है? हबीबरज़ि. ने कहा हाँ ! फिर मुसैलिमा ने कहा— क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? हबीबरज़ि. ने कहा— नहीं। इस पर मुसैलिमा ने आदेश दिया कि उनका एक अंग काट दिया जाए। तब मुसैलिमा ने पुनः उस से पूछा— क्या तू गवाही देता है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं? हबीबरज़ि. ने कहा हाँ ! फिर उसने कहा— क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? हबीबरज़ि. ने कहा— नहीं ! फिर उसने आपरज़ि. का एक दूसरा अंग काटने का आदेश दिया। प्रत्येक अंग काटने के पश्चात् वह प्रश्न करता जाता था कि क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और हबीबरज़ि. कहता था कि नहीं। इस प्रकार उसके समस्त अंग काटे गए तथा अन्त में इसी प्रकार टुकड़े-टुकड़े होकर अपने ईमान की घोषणा करते हुए वह ख़ुदा से जा मिला। उम्मे अम्मारःरज़ि. स्वयं रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के साथ बहुत से युद्धों में सम्मिलित हुईं। अतः यह एक शुद्ध ईमान वाला दल था जिस के सदस्य मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से धन-दौलत माँगने नहीं आए थे अपितु केवल ईमान माँगने आए थे। अब्बासरज़ि. ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा— हे ख़ज़रज क़बीले के लोगो ! यह मेरा प्रियजन अपनी जाति में प्रतिष्ठावान है, उसकी जाति के लोग चाहे वे मुसलमान हैं अथवा नहीं उसकी रक्षा करते हैं, परन्तु अब उसने निर्णय किया है कि वह तुम्हारे पास जाए। हे 'ख़ज़रज' के लोगो ! यदि यह तुम्हारे पास गया तो सम्पूर्ण अरब तुम्हारा विरोधी हो जाएगा। यदि तुम अपने दायित्व को समझते तथा उन ख़तरों को पहचानते हुए जो तुम्हें उस के धर्म की सुरक्षा में तुम्हारे सामने आने वाले हैं उसे ले जाना चाहते हो तो ख़ुशी से लो जाओ अन्यथा इस इरादे से हट जाओ। इस दल के सरदार 'अलबरा' थे। उन्होंने कहा— हम ने आप की बातें सुन लीं। हम अपने संकल्प में दृढ़ हैं, हमारे प्राण ख़ुदा के नबी के चरणों पर न्योछावर हैं। अब उसका जो भी निर्णय है हम उसका प्रत्येक निर्णय स्वीकार करेंगे। इस पर रसूले करीम (स.अ.व.) ने उन्हें इस्लामी शिक्षा के संबंध में समझाना आरम्भ किया तथा ख़ुदा तआला के एक होने की आस्था हृदय में बिठाने का उपदेश दिया और उन्हें कहा कि यदि वे इस्लाम की सुरक्षा अपनी पत्नियों तथा अपनी सन्तान की तरह करने का प्रण करते हैं तो वह आप के साथ जाने के लिए तैयार हैं। अभी आप अपनी बात समाप्त नहीं कर पाए थे कि मदीना के बहत्तर सरफ़रोश (प्राणों की बाज़ी लगाने वाले लोग) सहमत होकर एक स्वर में चिल्लाए हाँ! हाँ!! उस समय भावावेग में उन्हें मक्का वालों के उत्पातों का ध्यान न रहा तथा उन की आवाज़ें वातावरण में गूँज गईं। अब्बासरज़ि. ने उन्हें सतर्क किया और कहा— ख़ामोश ! ऐसा न हो कि मक्का के लोगों को इस घटना का पता लग जाए!! परन्तु वे ईमान प्राप्त कर चुके थे, अब मृत्यु उनकी दृष्टि में तुच्छ हो चुकी थी। अब्बासरज़ि. की बात सुनकर उनका एक सरदार बोला— हे अल्लाह के रसूल ! हम डरते नहीं, आप आज्ञा दीजिए हम अभी मक्का वालों से लड़कर उन के द्वारा आपस. पर किए गए अत्याचारों का बदला लेने के लिए तैयार हैं। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया— अभी अल्लाह तआला ने मुझे उन के मुकाबले पर खड़ा होने का आदेश नहीं दिया। तत्पश्चात् मदीना के लोगों ने आप की बैअत की (अर्थात् दीक्षित हुए) और सभा स्थगित हुई।

मक्का के लोगों को इस घटना की उड़ती ख़बर पहुँच गई तथा वे मदीने के सरदारों के पास शिकायत लेकर पहुँच गए परन्तु चूंकि अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल मदीने के जत्थे का सरदार था तथा उसे स्वयं इस घटना का ज्ञान नहीं था। इसलिए उसने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि उन्होंने यों ही कोई झूठी निराधार बात सुन ली है। ऐसी कोई घटना नहीं घटी क्योंकि मदीना के लोग मुझ से परामर्श किए बिना कोई कार्य नहीं कर सकते। परन्तु वह क्या समझता था कि अब मदीना के लोगों के हृदयों में शैतान के स्थान पर ख़ुदा तआला की बादशाहत स्थापित हो चुकी थी !!! तत्पश्चात् मदीना का जत्था वापस चला गया।

मक्का से मदीना की ओर हिजरत (पलायन)

रसूले करीम (स.अ.व.) और आपके साथियों ने हिजरत की तैयारी आरम्भ कर दी। एक के बाद एक ख़ानदान मक्का से लुप्त होने आरम्भ हुए और अब वे लोग भी जो ख़ुदा तआला की बाशाहत की प्रतीक्षा कर रहे थे निडर हो गए। कई बार एक ही रात में मक्का की एक पूरी गली के मकानों को ताले लग जाते थे और प्रातः काल जब शहर के लोग गली को सुनसान पाते तो पूछने पर मालूम होता था कि इस गली के समस्त लोग मदीना की ओर हिजरत कर गए हैं तथा इस्लाम के इस अद्भुत प्रभाव को देख कर जो मक्का वालों में अन्दर ही अन्दर फैल रहा था वे स्तब्ध रह जाते थे।

अन्ततः मक्का मुसलमानों से ख़ाली हो गया, केवल कुछ दास, स्वयं रसूलुल्लाह (स.अ.व.), हज़रत अबू बकररज़ि. और हज़रत अलीरज़ि. मक्का में रह गए। जब मक्का के लोगों ने देखा कि अब शिकार हमारे हाथ से निकला जा रहा है तो सरदार पुनः एकत्र हुए तथा परामर्श करने के पश्चात उन्होंने यह निर्णय किया कि अब मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) का वध कर देना ही उचित है। ख़ुदा तआला के विशेष चमत्कार से आप का वध करने की तिथि आप की हिजरत की तिथि के अनुकूल पड़ी। जब मक्का के लोग आपके घर के सामने आप का वध करने के लिए एकत्र हो रहे थे, आपस. रात के अंधेरे में हिजरत के इरादे से अपने घर से बाहर निकल रहे थे। मक्का के लोग अवश्य सन्देह करते होंगे कि उनके इरादे की सूचना मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को भी मिल चुकी होगी, परन्तु फिर भी जब आप उनके सामने से गुज़रे तो उन्होंने यही समझा कि यह कोई अन्य व्यक्ति है और आप पर आक्रमण करने के स्थान पर सिमट-सिमट कर आपस. से छुपने लग गए ताकि उनके इरादों की सूचना मुहम्मद (स.अ.व.) को न पहुँच

जाए। उस रात से एक दिन पूर्व ही अबू बकर[रज़ि.] को भी आप के साथ हिजरत करने की सूचना दे दी गई थी अतः वह भी आप[स.] को मिल गए। दोनों मिलकर थोड़ी देर में मक्का से रवाना हो गए तथा मक्का से तीन-चार मील पर 'सौर' नामक पहाड़ी के एक सिरे पर एक गुफ़ा में शरण ली[1]। जब मक्का के लोगों को मालूम हुआ कि मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) मक्का से चले गए हैं तो उन्होंने एक सेना एकत्र की तथा आप का पीछा किया। उन्होंने एक खोजी अपने साथ लिया जो आप की खोज लगाते हुए 'सौर' पर्वत पर पहुँचा। उसने वहाँ उस गुफ़ा के पास पहुँच कर जहाँ आप[स.] अबू बकर[रज़ि.] के साथ छुपे हुए थे, पूर्ण विश्वास के साथ कहा कि या तो मुहम्मद (स.अ.व.) इस गुफ़ा में है या आकाश पर चढ़ गया है। उस की इस घोषणा को सुन कर अबू बक़र[रज़ि.] का हृदय बैठने लगा और उन्होंने धीमे स्वर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से कहा— शत्रु सर पर आ पहुँचा है और अब कुछ ही क्षणों में गुफ़ा में प्रवेश करने वाला है। आप[स.] ने फ़रमाया— لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰہَ مَعَنَا[2] अबू बकर डरो नहीं ख़ुदा हम दोनों के साथ है। अबू बकर[रज़ि.] ने उत्तर में कहा— हे अल्लाह के रसूल ! मैं अपने प्राणों के लिए नहीं डरता क्योंकि मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ, मारा गया तो एक व्यक्ति ही मारा जाएगा। हे अल्लाह के रसूल ! मुझे तो केवल यह भय है कि यदि आप के प्राण को कोई आघात पहुँचा तो संसार से आध्यात्मिकता और धर्म का नाम मिट जाएगा। आप[स.] ने फ़रमाया— कोई परवाह नहीं, यहाँ हम दो ही नहीं तीसरा ख़ुदा भी हमारे साथ है। चूंकि अब समय आ पहुँचा था कि ख़ुदा तआला इस्लाम को बढ़ाए और उन्नति दे। मक्का वालों के लिए छूट का समय समाप्त हो चुका था। ख़ुदा तआला ने मक्का वालों की आँखों पर पर्दा डाल दिया तथा उन्होंने खोजी से उपहास आरम्भ कर दिया और कहा— क्या उन्होंने इस खुले स्थान पर शरण लेना थी, यह कोई शरण का स्थान नहीं है फिर यहाँ साँप बिच्छुओं की बहुतात है, यहाँ कौन समझदार व्यक्ति शरण ले सकता है तथा गुफ़ा में झांके बिना ही खोजी की खिल्ली उड़ाते हुए वापस लौटे। दो दिन उसी गुफ़ा में प्रतीक्षा करने के पश्चात् पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार रात्रि के समय गुफ़ा के पास सवारियां पहुँचाई गईं तथा दो तीव्रगामी ऊँटनियों पर मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) और आप के साथी रवाना हुए। एक ऊँटनी पर मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) और आप को मार्ग दिखाने वाला व्यक्ति सवार हुआ और दूसरी ऊँटनी पर हज़रत अबू बक़र[रज़ि.] और उन के नौकर आमिर बिन फ़ुहैरा सवार हुए।

मदीना की ओर प्रस्थान करने से पूर्व रसूले करीम (स.अ.व.) ने अपना मुख मक्का की ओर किया, उस पवित्र शहर में जिसमें आपने जन्म लिया जिसमें आप का अवतरण हुआ और जिसमें हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के युग से आपके पूर्वज रहते चले आए थे, आप ने अन्तिम दृष्टि डाली और बड़े दुःख के साथ शहर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया— हे मक्का की बस्ती ! तू मुझे सब स्थानों से अधिक प्रिय है परन्तु तेरे लोग मुझे यहाँ रहने नहीं देते। उस समय हज़रत अबू बकर[रज़ि.] ने भी नितान्त खेद के साथ कहा — इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है अब ये अवश्य तबाह होंगे।[1]

मुहम्मद (स.अ.व.) को पकड़ने के लिए सुराक़ा द्वारा पीछा किया जाना तथा उसके संबंध में आप[स.] की एक भविष्यवाणी

जब मक्का वाले आप की खोज में असफल रहे तो उन्होंने घोषणा कर दी कि जो कोई मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) या अबू बकर[रज़ि.] को जीवित या मृत वापस ले आएगा तो उसे सौ ऊँटनियां पुरस्कार स्वरूप दी जाएँगी। इस घोषणा की सूचना मक्का के आस-पास के क़बीलों को पहुँचा दी गई। अतः सुराक़ा बिन मालिक एक बद्दू सरदार इस पुरस्कार के लालच में आप के पीछे रवाना हुआ। खोज लगाते-लगाते उसने आप को मदीना के मार्ग पर जा लिया। जब उस ने दो ऊँटनियों और उन के सवारों को देखा तथा समझ लिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) और उनके साथी हैं। उसने अपना घोड़ा उनके पीछे दौड़ा दिया, परन्तु मार्ग में घोड़े ने ज़ोर से ठोकर खाई और सुराक़ा गिर गया। सुराक़ा बाद में मुसलमान हो गया था। वह अपना वृत्तान्त स्वयं इस प्रकार वर्णन करता है— जब मैं घोड़े से गिरा तो मैंने अरबों के नियमानुसार अपने तीरों से शकुन निकाला और शकुन अशुभ निकला परन्तु पुरस्कार के लालच के कारण मैं पुनः घोड़े पर सवार हो कर उनके पीछे दौड़ा। रसूले करीम (स.अ.व.) मर्यादापूर्वक अपनी ऊँटनी पर सवार चले जा रहे थे। उन्होंने मुड़ कर मुझे नहीं देखा परन्तु हज़रत अबू बक़र[रज़ि.] (इस भय से कि रसूले करीम (स.अ.व.) को कोई आघात न पहुँचे) बार-बार मुँह फेरकर देखते थे। जब दूसरी बार मैं उनके निकट पहुँचा तो पुनः मेरे घोड़े ने ज़ोर से ठोकर खाई और मैं गिर गया। इस पर पुनः मैंने अपने तीरों से शकुन निकाला और शकुन अशुभ निकला। मैंने देखा कि घोड़े के पैर रेत में इतने अधिक धंस गए कि उनका निकालना कठिन हो रहा था। तब मैंने समझा कि ये लोग ख़ुदा की सुरक्षा में हैं। मैंने उन्हें आवाज़ दी कि ठहरो और मेरी बात सुनो ! जब वे लोग मेरे पास आए तो मैंने उन्हें बताया कि मैं यहाँ इस इरादे से आया था, परन्तु अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और अब वापस जा रहा हूँ क्योंकि मुझे विश्वास हो गया है कि ख़ुदा तआला आप लोगों के साथ है। रसूले करीम (स.अ.व.) ने फ़रमाया— बहुत अच्छा, जाओ, परन्तु देखो किसी को हमारे बारे में सूचित न करना। उस समय मेरे हृदय में विचार आया कि चूंकि यह व्यक्ति सच्चा मालूम होता है इसलिए अवश्य ही एक दिन सफल होगा। इस विचार के आने पर मैंने निवेदन किया कि जब आप को प्रभुत्व प्राप्त होगा उस समय के लिए मुझे कोई सुरक्षा का प्रपत्र लिख दें। आप ने हज़रत अबू बक़र के सेवक आमिर बिन फ़ुहैरा को आदेश दिया कि इसे अभयदान पत्र लिख दिया जाए। अतः उन्होंने अभयदान पत्र लिख दिया[1]। जब सुराक़ा लौटने लगा तो उसी समय अल्लाह तआला ने आप पर सुराक़ा की भावी परिस्थितियां परोक्ष से प्रकट कर दीं, उनके अनुसार आप ने उसे फ़रमाया— सुराक़ा उस समय क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में 'किस्रा' के कंगन होंगे। सुराक़ा ने स्तब्ध हो कर पूछा किस्रा बिन हुरमुज़ ईरान के बादशाह के? आप[स.] ने फ़रमाया— हाँ[2]। आप की यह भविष्यवाणी लगभग सोलह, सत्तरह वर्ष के पश्चात् अक्षरशः पूरी हुई। सुराक़ा मुसलमान होकर मदीना आ गया। रसूले करीम (स.अ.व.) के मृत्योपरान्त पहले हज़रत अबू बक़र[रज़ि.] फिर हज़रत उमर[रज़ि.] ख़लीफ़ा हुए। इस्लाम की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा देख कर ईरानियों ने मुसलमानों पर आक्रमण आरम्भ कर दिए और इस्लाम के कुचलने के स्थान पर इस्लाम के मुकाबले में स्वयं कुचले गए। किस्रा की राजधानी इस्लामी सेनाओं के घोड़ों की टापों से रौंदी गई तथा ईरान के ख़ज़ानें मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए। उस ईरानी शासन का जो माल इस्लामी सेनाओं के अधिकार में आया उसमें वे कंगन भी थे जिन्हें किस्रा ईरानी नियम के अनुसार राज सिंहासन पर बैठते समय पहना करता था। सुराक़ा मुसलमान होने के पश्चात् अपनी इस घटना को जो रसूले करीम (स.अ.व.) की हिजरत के समय उसके सामने आई थी मुसलमानों को बड़े गर्व के साथ सुनाया करता था तथा मुसलमान इस बात से अवगत थे कि रसूले करीम (स.अ.व.) ने उसे सम्बोधित करके फ़रमाया था— सुराक़ा उस समय तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथ में किस्रा के कंगन होंगे। हज़रत उमर[रज़ि.] के सामने जब पराजित शत्रु से ज़ब्त किए हुए माल लाकर रखे गए तथा उसमें उन्होंने किस्रा के कंगन देखे तो सारा दृश्य आप की आँखों के सामने घूम गया। वह अशक्त और निर्बलता का समय जब ख़ुदा के रसूल को अपनी जन्मभूमि छोड़ कर मदीना

शेष 7 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 30 April 2026 Issue No. 18

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{41}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को शुरू से ही मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद की माता से, जिन्हें लोग आम तौर पर "फज्जे दी मां" कहा करते थे, कुछ बे-तअल्लुकी सी थी। इसका कारण यह था कि हज़रत साहिब के रिश्तेदारों को दीन से बहुत बेरुख़ी थी और उनका झुकाव उनकी ओर था, और वे उसी रंग में रंगी हुई थीं। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनसे दाम्पत्य संबंध छोड़ दिया था। हाँ, आप ख़र्च आदि नियमित रूप से दिया करते थे।

वालिदा साहिबा ने फ़रमाया कि मेरी शादी के बाद हज़रत साहिब ने उन्हें कहलवाया कि अब तक तो जैसे चलता रहा, चलता रहा, अब मैंने दूसरी शादी कर ली है, इसलिए अब यदि मैं दोनों पत्नियों में बराबरी नहीं रखूँगा तो मैं गुनहगार हो जाऊँगा। इसलिए अब दो बातें हैं—या तो तुम मुझसे तलाक ले लो या मुझे अपने अधिकार छोड़ दो। मैं तुम्हें खर्च देता रहूँगा।

उन्होंने कहलवा भेजा कि अब मैं बुढ़ापे में क्या तलाक लूँगी, बस मुझे खर्च मिलता रहे, मैं अपने बाकी अधिकार छोड़ती हूँ। वालिदा साहिबा फ़रमाती हैं कि फिर ऐसा ही होता रहा, यहाँ तक कि मुहम्मदी बेगम का मामला उठा और आपके रिश्तेदारों ने विरोध करके मुहम्मदी बेगम का निकाह दूसरी जगह कर दिया। और फ़ज़ल अहमद की माता ने उनसे संबंध नहीं तोड़ा बल्कि उनके साथ ही रहीं। तब हज़रत साहिब ने उन्हें तलाक दे दी।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत साहिब का यह तलाक देना आपके उस इश्तिहार के अनुसार था जो आपने 2 मई 1891 को प्रकाशित किया था और जिसकी सुर्ख़ी थी—"इश्तिहार नुसरत दीन व क़तअ तअल्लुक़ अज़ अकारिब मुख़ालिफ़ दीन।" इसमें आपने बयान फ़रमाया था कि यदि मिर्ज़ा सुल्तान अहमद और उनकी माता इस मामले में विरोधी प्रयास से अलग न हुए, तो फिर आपकी ओर से मिर्ज़ा सुल्तान अहमद नाफ़रमान और विरासत से वंचित होंगे और उनकी माता को आपकी ओर से तलाक होगी।

वालिदा साहिबा फ़रमाती थीं कि फ़ज़ल अहमद ने उस समय अपने आपको नाफ़रमान होने से बचा लिया।

इसी प्रकार वालिदा साहिबा ने फ़रमाया कि इस घटना के बाद एक बार सुल्तान अहमद की माता बीमार हो गईं। चूँकि हज़रत साहिब की ओर से मुझे अनुमति थी, मैं उन्हें देखने के लिए गई। वापस आकर मैंने हज़रत साहिब से कहा कि फज्जे की मां बीमार है और यह तकलीफ़ है। आप चुप रहे। जब मैंने दूसरी बार कहा, तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हें दो गोलियाँ देता हूँ, यह दे आओ, मगर अपनी ओर से देना, मेरा नाम न लेना।

वालिदा साहिबा फ़रमाती थीं कि और भी कुछ मौकों पर हज़रत साहिब ने इशारे से मुझ पर ज़ाहिर किया कि मैं इस प्रकार, कि हज़रत साहिब का नाम बीच में न आए, अपनी ओर से कभी-कभी कुछ मदद कर दिया करूँ। अतः मैं ऐसा करती रहती थी।

{42}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे शेख अब्दुर्रहमान साहिब मिस्री ने बयान किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नमाज़ ज़ुहर के बाद मस्जिद में बैठ गए। उन दिनों आपने शेख सअदुल्लाह लुधियानवी के संबंध में लिखा था कि यह निष्फल रहेगा और इसका जो बेटा मौजूद है वह नामर्द है, अर्थात उसकी संतान आगे नहीं चलेगी (ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि सअदुल्लाह बहुत कठोर विरोधी था और हज़रत मसीह मौऊद के विरुद्ध बहुत अशोभनीय बातें कहा करता था)।

लेकिन अभी आपकी यह लिखावट प्रकाशित नहीं हुई थी। उस समय मौलवी मुहम्मद अली साहिब ने आपसे अर्ज़ किया कि ऐसा लिखना क़ानून के विरुद्ध है। उसका बेटा यदि मुक़दमा कर दे तो फिर इस बात का क्या प्रमाण हो सकता है कि वह वास्तव में नामर्द है।

हज़रत साहिब पहले नरमी के साथ उचित ढंग से उत्तर देते रहे, लेकिन जब मौलवी मुहम्मद अली साहिब ने बार-बार यही बात रखी और अपनी राय पर ज़ोर दिया, तो हज़रत साहिब का चेहरा लाल हो गया और आपने क्रोध के स्वर में फ़रमाया—

"जब नबी हथियार लगा कर बाहर आ जाता है तो फिर हथियार नहीं उतारता।"

{43}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि हमारे वालिद साहिब प्रारम्भ में शिक्षा के लिए बाहर गए। शायद दिल्ली की बात है कि वे एक मस्जिद में ठहरे हुए थे। चूँकि सामान समाप्त हो गया था, कई समय भूखे ही गुज़र गए। अंत में किसी ने उन्हें विद्यार्थी समझकर एक चपाती दी, जो बासी हो जाने के कारण सूखकर बहुत कठोर हो चुकी थी।

वालिद साहिब ने वह ले ली, लेकिन अभी खाई नहीं थी कि उनका एक साथी, जो क़ादियान का कोई व्यक्ति था और वह भी उसी प्रकार भूखा था, बोला—"मिर्ज़ा जी, हमारा भी ध्यान रखना।"

हज़रत साहिब फ़रमाते थे कि इस पर वालिद साहिब ने वह चपाती उसकी ओर फेंक दी, जो उसके नाक पर लगी और लगते ही वहाँ से ख़ून बहने लगा।

विनीत निवेदन करता है कि वालिदा साहिबा ने बयान किया कि वह साथी भी क़ादियान का कोई मुग़ल था, लेकिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी बयान करते हैं कि मैंने हज़रत साहिब से सुना है कि वह कोई नाई या मरासी था।

अतः हज़रत साहिब इसे एक विनोदी प्रसंग के रूप में बयान करते थे कि इन लोगों को ऐसे अवसर पर भी हँसी की बात ही सूझती है।

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad